Madhulika (Hindi Pathyapustak) Class - 8

8 हिंदी (मधुलिका)

1. कुंडलियाँ

मौखिक

(क) बिना सोचे-विचारे काम करने से क्योंकि तब वह काम बिगड़ जाता है।

(ख) क्योंकि दौलत अर्थात लक्ष्मी तो चंचल होती है आज यहाँ, कल वहाँ। और जो चीज़ एक जगह ठहर ही नहीं सकती, उस पर अभिमान नहीं करना चाहिए।

(ग) मीठी वाणी बोलकर। दौलत तो चार दिन में समाप्त हो जाती है परन्तु मीठी वाणी सदा साथ निभाती है।

लिखित

1. (क) जो व्यक्ति बिना सोचे-विचारे काम करता है।
   (ख) दौलत की तुलना बहते जल के साथ की गई है।
   (ग) व्यक्ति को अपने जीवन-काल में मीठी वाणी से सबका मन जीतना चाहिए।

2. (क) अविवेकी से कार्य करने वाला व्यक्ति न केवल हानि उठाता है बल्कि उपहास का पात्र भी बनता है। उसका मन व्याकुल हो जाता है। खाना-पीना, हँसना-गाना कुछ भी अच्छा नहीं लगता। उसे अपने-आप पर गुस्सा भी आता है।
   (ख) दूसरा पद हमें गहरी शिक्षा देता है। हमें कभी भी धन-दौलत का घमंड नहीं करना चाहिए। धन तो बहते जल की भाँति है, आज है, कल नहीं। अच्छा तो यह है कि हम अपने सद्वचनों से दूसरों का मन जीतें और ईमानदारी से जीवन जीएँ।

3. (क) (*iii*), (ख) (*i*)

4. (क) ये पंक्तियाँ हमें सावधान करती हैं कि हम कोई भी कार्य बिना सोचे-विचारे आरंभ न करें। बिना सोचे-विचारे किया गया कार्य अंत में दुख और निराशा लाता है। मन में क्रोध और बेचैनी पैदा करता है।
   (ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि धन के विषय में ज्ञान दे रहे हैं। कवि कहते हैं कि धन पाने के लिए लोग हज़ार तरह की बेईमानियाँ करते हैं। वे यह नहीं जानते कि धन तो मेहमान की तरह होता है। यह किसी के पास अधिक समय तक नहीं रूका करता।

5. **संकेत :** धन में अद्भुत शक्ति, धनवान व्यक्ति अधिक वस्तुएँ पा सकता है, अधिक सुविधाएँ पा सकता, अधिक सेवाएँ पा सकता है, यह सब पाकर अधिकतर लोगों को अभिमान हो ही जाता है, ऐसे लोग स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ मानने लगते हैं।

   संकेत : अनेक चीज़ों का अभिमान हो सकता है, शारीरिक शक्ति का, बुद्धि का, विद्या का, सामाजिक मेल-जोल का, परिवार के सदस्यों या रिश्तेदारों के उच्च पद का।

   संकेत : जो कार्य मैं करने जा रहा हूँ इसका क्या परिणाम हो सकता है, इसके लाभ क्या-क्या होंगे और कौन-सी हानियाँ होने की संभावना है, क्या मेरे कार्य से किसी को चोट या हानि तो नहीं पहुँचेगी, क्या अधिकतर लोग मुझसे नाराज़ तो नहीं होंगे, क्या इससे मेरे परिवार की, समाज की व देश की उन्नति होगी?

भाषा-बोध

1. करै–करे, पावै–पाए, पाछै–पीछे, सनमान–सम्मान, पछिताय–पछताए, आवै–आए, अपनौ–अपना, रहत–रहता, हँसाय–हँसी, जस–यश

2. जग–जगत, दुनिया; चैन–शांति, आराम; दौलत–धन, संपत्ति; वचन–शब्द, वाणी; पाहुन–अतिथि, मेहमान

3. (*i*) **जो-वह :** जो बोलेगा, वह दरवाज़ा खोलेगा।
   (*ii*) **जिनके-उन्हें :** जिनके अंक 90 से अधिक हैं, उन्हें पुरस्कार मिलेगा।

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** हानि होने की संभावना समाप्त या कम हो जाती है, कार्य में सफलता प्राप्त होती है, जीवन में उन्नति होती है, आत्मविश्वास बढ़ता है, समाज में मान-सम्मान बढ़ता है, मन शांत रहता है।

2. बच्चे अपना निजी अनुभव बताएँ।

3. **संकेत :** मधुर वाणी व्यक्ति की अनूठी साथी, सबका मन प्रसन्न करती है, मित्रता बढ़ाती है, सामाजिक मेल-जोल व भाईचारा बढ़ाती है।

4. **संकेत :** धन का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान, धन के बिना अधिकतम कार्य हो ही नहीं पाते, आदर्श जीवन जीने में सहायक, धन का होना अनिवार्य, हर व्यक्ति को धन पाने के लिए परिश्रम करना चाहिए, लेकिन धन का अभिमान नहीं करना चाहिए, न ही लालच

में पड़कर सदा धन के बारे में सोचना चाहिए, धन सदा सोच-समझकर खर्च करना चाहिए, फ़िज़ूलखर्ची से सदा बचना चाहिए।

5. **संकेत :** धन सेवक के रूप में हमारी अनेक प्रकार से सेवा करता है; हमें सुविधाएँ दिलाता है व आराम के साधन उपलब्ध करता है लेकिन यदि यह स्वामी बन जाए तो व्यक्ति सोते-जागते, उठते-बैठते इसी के बारे में सोचता रहता है। व्यक्ति लालची और कंजूस हो जाता है। वह धन पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अच्छा जीवन नहीं जी सकता।

6. सस्वर वाचन हेतु बच्चों का मार्ग-दर्शन करें।

2. रथचक्र

मौखिक

(क) लेखक को अपने बचपन के सुख-दुख की यादें आ रही हैं। जब वे छोटे से ही थे तभी उनके पिता का स्वर्गवास हो गया था। माँ, दीदी और बाबा का बिलखना याद आते ही वह काँप उठते हैं।

(ख) किसी ने दुकान का उधार न चुकाया। सगे-संबंधियों ने भी मदद करने को मना कर दिया। पड़ोसी दुकानदार ने ग्राहक तोड़ लिए। किसी ने घर के बराबर की ज़मीन हड़प ली क्योंकि बाबा बूढ़े थे और लेखक छोटे।

(ग) घर की परिस्थिति ठीक होने लगी। लेखक के बड़े भैया परीक्षा में अव्वल आए।

(घ) लेखक स्कूल जाते, दुकान और खेतों का काम देखते। खाली समय में पढ़ते और एक पैसा भी बेकार नहीं खरचते।

(ङ) लेखक के परिवार को तार द्वारा बड़े भाई के शहीद हो जाने की सूचना मिली।

लिखित

1. (क) बड़े भैया ने लेखक को बाबा की सहायता करने की ज़िम्मेदारी सौंपी।

   (ख) यह सोचकर कि यदि उनके (पौधों के) फलने-फूलने तक वे जीवित न भी रहे तो बच्चे उनके फल खाएँगे।

   (ग) लेखक की भाभी केरल की रहने वाली थीं इसलिए उन्हें पहाड़ों की ज़िंदगी के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

   (घ) चैत से पहले ही भारत का पाकिस्तान के साथ युद्ध शुरू हो गया था इसलिए देश की स्थिति बिगड़ने लगी।

   (ङ) वे समझते थे कि इससे दिल कमज़ोर हो जाता है।

2. (क) यह पंक्ति लेखक ने अपने बारे में कही है। उस समय लेखक अपने अतीत में खोए हुए थे। बचपन में ही उनके पिता जी की मृत्यु हो गई थी। पूरे घर में कोहराम मचा था। उसी दृश्य की याद कर लेखक काँप-काँप उठते थे।

   (ख) उनके पोते ने उनका सिर गर्व से ऊँचा किया था। उसने (पोते ने) प्रथम स्थान पाया था। उसे वज़ीफ़ा भी मिलने लगा था। इसी कारण वे सबसे अपने पोते का बखान करते घूम रहे थे।

   (ग) लेखक के पिता जी बचपन में ही स्वर्ग सिधार गए थे। उनकी मृत्यु के पश्चात बाबा ने दिन-रात एक कर दिया। कारोबार को सँभाला, घर-बार को सँभाला, बच्चों को सँभाला। उनकी मेहनत से ही परिवार फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो सका और सम्मान का जीवन जीने लगा। लेखक ने उन्हें देवताओं-सा माना इसलिए उन्होंने उनका फ़ोटो साफ़ करके देवताओं के पास रख दिया था।

   (घ) रेलवे स्टेशन पर भैया काफ़ी समय लेखक के साथ रहे। उन्होंने लेखक से कहा कि अगली बार वे लंबी छुट्टी लेकर आएँगे। एक-दो महीने घर पर ही निश्चिंत होकर बिताएँगे। वे एक बँगलानुमा नया मकान भी बनवाना चाहते थे। इन सब बातों से पता चलता है कि भैया एक ज़िम्मेदार व्यक्ति थे। वे अपने पूरे परिवार से प्रेम करते थे और उसे खुशी देना चाहते थे।

3. (क) (*iii*), (ख) (*i*), (ग) (*iv*)

4. (क) यह पंक्ति लेखक ने अपनी ज़िम्मेदारियों के बारे में कही हैं। उनके बचपन में ही उनके पिता जी का देहांत हो गया था। तब उनके दादा जी ने पूरी ज़िम्मेदारी उठाई। अब वे इस दुनिया में रहे। अब पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी लेखक के कंधों पर आन पड़ी है। उन्हें पूरे परिवार को सँभालना है, जिसमें उनकी माता जी, भाभी जी व दो छोटे-छोटे बच्चे थे।

   (ख) लेखक की माता जी को लेखक की शादी की बहुत लगन थी। वे उनके लिए चाँद-सी बहू लाना चाहती थीं। समय का चक्र कुछ ऐसा चला कि उनका बड़ा बेटा युद्ध में शहीद हो गया। उनकी बड़ी बहू घर पर आ गई। उसके साथ दो छोटे-छोटे बच्चे भी थे। अपनी विधवा बहू तथा दो पोतों को देखने के बाद वे अपनी नई ज़िम्मेदारी उठाने को तैयार हो गईं इसलिए उन्होंने फिर अपनी होने वाली चाँद-सी बहू का ज़िक्र कभी नहीं किया

5. **संकेत**–प्रत्येक पात्र ने अपनी ज़िम्मेदारी को समझा और उसे निभाया; इसी कारण परिवार फिर से सँभल गया; यदि सब लापरवाह और स्वार्थी हो जाते तो पूरा परिवार लगभग तबाह (नष्ट) हो जाता; वे सम्मान का जीवन न जी पाते; कुछ संपत्ति ने लोगों ने लूट ही ली थी, बची-खुची भी बिक जाती; वे गरीबी में जीवन बिताने को मजबूर होते; लोग उनका उपहास करते।

भाषा-बोध

1.

	विशेषण	विशेष्य		विशेषण	विशेष्य
(क)	लंबे-लंबे	पेड़	(ख)	पूरा-पूरा	लाभ
(ग)	क्या-क्या	बातें	(घ)	लंबा-चौड़ा	आँगन
(ङ)	हरा-भरा	बगीचा			

2.

	क्रिया-विशेषण	भेद
(ख)	बिलख-बिलखकर	रीतिवाचक
(ग)	आज भी	कालवाचक
(घ)	बहुत कुछ	परिमाणवाचक
(ङ)	यहाँ	स्थानवाचक

3. (*i*) चाँदी-सी – बर्फ़, (*ii*) छड़ी-सा – दुबला-पतला, (*iii*) चूहे-सा – डरपोक, (*iv*) लोमड़ी-सा – चालाक, (*v*) गऊ-सा – विनम्र, (*vi*) कर्ण-सा – उदार

4. (ख) सबके द्‌वारा ठेंगे दिखला दिए गए।
(ग) मेरे द्‌वारा खूब परिश्रम किया जाएगा।
(घ) उसी के द्‌वारा मालटे के पौधे लाए गए थे।
(ङ) ये गड्‌ढे अम्मा द्‌वारा खुदवाए गए थे।

5. (क) (*i*) पड़ोसिन, (*ii*) पोती, (*iii*) भाभी, (*iv*) बैल, (*v*) देवी, (*vi*) बच्चियाँ
(ख) मैं– हम, फ़ौज– फ़ौजें, खबर– खबरें, छुट्‌टी– छुट्‌टियाँ, महीना– महीने, माता– माताएँ

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** सारे बिगड़े लाभ सही हो जाते हैं, ऊँचे लक्ष्य हासिल हो जाते हैं, धन की कमी नहीं रहती, कोई कार्य अधूरा नहीं रहता, सबकी इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं, मन शांत रहता है, समाज में मान-सम्मान बढ़ता है।

2. **संकेत : मुंशी प्रेमचंद :** भयंकर गरीबी में बचपन बिताया, तन पर फटे-पुराने वस्त्र, पाँव में फटे जूते, अथक परिश्रम किया, संघर्ष किया, पढ़ाई-लिखाई की, शिक्षक बने, शिक्षा-अधिकारी बने, महान लेखक बने।
[नोट : पाठ्य-पुस्तक में संकेत हेतु दिए गए चारों महापुरुषों का जन्म निर्धन परिवार में हुआ था और चारों ने अपने परिश्रम के दम पर उच्च पद प्राप्त किए, अब्राहम लिंकन – अमरीका के राष्ट्रपति बने, लाल बहादुर शास्त्री – भारत के प्रधानमंत्री बने, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम – भारत के राष्ट्रपति बने।]

3. **संकेत :** जलवायु का अंतर (पहाड़ों पर ठंड, केरल में नयी), रीति-रिवाज़ों का अंतर, भाषा का अंतर, वनस्पतियों का अंतर, पहनावे का अंतर आदि।

4. बच्चे स्वयं अपनी पसंद बताएँ।

5. **संकेत :** पाकिस्तान के उकसाने के कारण युद्‌ध शुरु हुआ, भारत की जीत हुई और पाकिस्तान की हार, लगभग एक लाख पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सेना के सामने हथियार डाले, युद्‌ध केवल चौदह दिन चला, तब (सन् 1971) भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी थीं।

6. स्वयं करे।

7. चित्र बनाने हेतु बच्चों का मार्ग-दर्शन करें।

3. भारतीय सिनेमा के जनक

मौखिक

(क) घुंडिराज गोविंद फाल्के।

(ख) फिल्म निर्माण से संबंधित ज्ञान की कमी को पूरा करने के लिए इन्होंने फ़िल्म संबंधी साहित्य का सहारा लिया। देशी-विदेशी पत्र-पत्रिकाओं या सिनेमाघरों में लगी फ़िल्मों, जहाँ से जो जानकारी मिल सकती थी, एकत्र की।

(ग) फिल्में बनाने के लिए जो उपकरण चाहिए थे वे लंदन से ही लाए जा सकते थे इसलिए उन्होंने विदेश जाने का फैसला किया।

(घ) क्योंकि कोई माँ इस बात के लिए तैयार न थी कि उसके बेटे पर मृत्यु का दृश्य फिल्माया जाए।

(ङ) फाल्के एक रेस्तराँ में कॉफी पीने जाते थे। वहाँ उन्हें एक पतली-नाजुक उँगलियों वाला सुंदर युवक नज़र आया। वह युवक (सालुंके) उस रेस्तराँ में सह-बावर्ची था। तभी फाल्के ने यह निश्चय कर लिया, तारामती की भूमिका यही करेगा।

लिखित

1. (क) दादा साहब फाल्के का जन्म नासिक ज़िले के एक गाँव त्र्यंबकेश्वर में 30 अप्रैल, 1870 को हुआ था।
(ख) चित्रकला, नाट्य अभिनय और जादूगरी इनके बचपन के शौक थे।
(ग) सन् 1912 में फाल्के इंगलैंड से एक विलियमसन कैमरा, फ़िल्मों की कच्ची रील, फ़िल्म धोने और मुद्रित करने के उपकरण, एक प्रोजेक्टर

तथा फ़िल्मांकन का कुछ कच्चा सामान लेकर आए।

(घ) इस फ़िल्म का विज्ञापन था–सिर्फ़ तीन आने में देखिए, 57 हज़ार चित्रों वाली दो मील लंबी फ़िल्म।

(ङ) भारत की पहली बोलती फ़िल्म थी– आलम आरा। यह 14 मार्च, 1931 को रिलीज़ हुई।

2. (क) कैबोर्न लंदन से छपने वाली पत्रिका 'बायस्कोप' के संपादक थे। फाल्के यह पत्रिका नियमित रूप से मँगाया करते थे। उन्होंने उपकरण खरीदने में फाल्के की मदद की। उन्होंने उन्हें (फाल्के को) कई फ़िल्मी हस्तियों से भी मिलवाया था। उनमें से एक हैपबर्थ ने फाल्के को फ़िल्म निर्माण का प्रशिक्षण दिया।

(ख) सरस्वती फाल्के दादा साहब फाल्के की पत्नी तथा परिश्रमी व समझदार नारी थीं। उन्होंने कई प्रकार से फाल्के को सहयोग दिया। धन का प्रबंध करने के लिए उन्होंने अपने गहने गिरवी रख दिए थे। चालीस लोगों की यूनिट के लिए वह स्वयं खाना बनाती थीं। रात को रसोईघर में अँधेरा करके फ़िल्म की रील में छेद करती थीं। उन्होंने फ़िल्म के लिए दिन-रात एक कर दिया।

(ग) फ़िल्म तैयार होने के बाद इसे दर्शकों के बड़े वर्ग तक पहुँचाना ज़रूरी था। इसके लिए फाल्के फ़िल्म को साज़ो-सामान सहित बैलगाड़ी में लादकर जगह-जगह घूमते रहे। गाँवों में लोगों ने आना-दो आना देकर ज़मीन पर बैठकर यह फ़िल्म देखी। फाल्के दूर-दराज़ के शहरों में भी इस फ़िल्म को लेकर गए।

3. (क) (*i*), (ख) (*ii*), (ग) (*iv*)

4. फाल्के फ़िल्म बनाना चाहते थे। इन्होंने एक विदेशी फ़िल्म 'लाइफ़ आफ़ क्राइस्ट' देखी। यह फ़िल्म देखकर इनके मन में कई प्रश्न उठे। फ़िल्म की बारीकियों को जानने के लिए इन्होंने यही फ़िल्म दोबारा देखी। फ़िल्म देखते-देखते उनका दिमाग कई तकनीकों के बारे में विचार करने लगा। वे फ़िल्म तो देख रहे थे लेकिन उन्हें क्या करना है, कैसे करना है, इस बारे में वे विचार भी करते जा रहे थे।

5. **संकेत**–फाल्के एक सृजनशाली व्यक्ति थे। वे कुछ नया करना चाहते थे। उनके शौक थे–चित्रकला, अभिनय, जादूगरी आदि। उन्होंने छायांकन की बारीकियाँ भी सीखी थीं लेकिन किन्हीं कारणों से वे पहले तो पुरातत्व विभाग में कार्य करने लगे, फिर अपना प्रेस खोल लिया। इस कारण उन्हें लगा होगा कि वे अपनी ऊर्जा सही क्षेत्र में नहीं लगा रहे हैं।

भाषा-बोध

1. (क) **आँखों में रात काटना**–इस कठिन समस्या को हल करने के लिए मैंने कई रातें आँखों में काटीं।

(ख) **ठान लेना**–मैंने ठान लिया है कि इस बार दौड़ में पहला स्थान प्राप्त करना ही करना है।

(ग) **दिन-रात एक करना**–परीक्षा की तैयारी के लिए आर्यन ने दिन-रात एक कर दिया।

2. (*i*) **तक**–जब मैंने उसे बुलाया तो उसने देखा **तक** नहीं।

(*ii*) **भर**–मैं तो अभी आया **भर** हूँ।

(*iii*) **केवल**–मैं **केवल** कह सकता हूँ, कर नहीं सकता।

3.

व्यक्तिवाचक	**जातिवाचक**	**भाववाचक**
घुंडिराज	फ़िल्म	मेहनत
मुंबई	पत्नी	श्रद्धा
दादर	बेटी	सम्मान
कैबोर्न	देश	विश्वास
इंगलैंड	बावर्ची	कल्पना
तारामती	इलाका	सहारा

4. (क)

उपसर्ग	**मूल-शब्द**	**उपसर्ग**	**मूल-शब्द**
(*i*) महा +	पुरुष	(*ii*) प्र +	शिक्षण
(*iii*) अभि +	नेता	(*iv*) वि +	ज्ञापन
(*v*) सम् +	वाद	(*vi*) उप +	करण

(ख)

मूल-शब्द	**प्रत्यय**	**मूल-शब्द**	**प्रत्यय**
(*i*) जन्म +	दाता	(*ii*) भारत +	ईय
(*iii*) पुरोहित +	आई	(*iv*) विकास +	इत
(*v*) आवश्यक +	ता	(*vi*) पुराण +	इक

5.

विशेषण	**भेद**
(ख) कुछ	परिमाणवाचक
(ग) कई	परिमाणवाचक
(घ) कम	परिमाणवाचक
(ङ) पाँच	परिमाणवाचक

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** फ़िल्मों का पूरे समाज पर गहरा असर, युवक-युवतियों पर फ़िल्मी फ़ैशन तथा रंग-ढंग (Style) का पूरा प्रभाव, अच्छाइयाँ व बुराइयाँ फैला सकती हैं, युवक नायक की तथा युवतियाँ नायिका की नकल करने लगती हैं, कहानी दिमाग पर ज़रूर असर डालती हैं, अच्छे विषयों पर बनी फ़िल्में देखने का सुझाव।

2. बच्चे अपने अनुभव के आधार पर बताएँ।

3. स्वयं करे।

4. इन सबने अछूते विषयों पर फ़िल्में बनाईं, फ़िल्म-निर्माण में नए-नए प्रयोग किए।

5. बच्चे अपने ही परिवेश के उदाहरण ढूँढ़ने की कोशिश करें। (संकेत : कस्तूरबा गांधी ने बापू को भरपूर सहयोग दिया।)

6.7. बच्चों को प्रोत्साहित करें व मार्ग-दर्शन दें।

4. समय का सदुपयोग

मौखिक

(क) ''आपका पत्र यथासमय मिल गया था, पर इन दिनों काम रहने के कारण मैं जल्द जवाब न दे सका। क्षमा करें।''

(ख) जो लोग सचमुच बड़े हैं और व्यस्त रहते हैं, उनका पत्र-व्यवहार भी बहुत व्यवस्थित रहता है। उनका जीवन नियमित रहता है और वे रोज का काम समय पर निबटा लेते हैं।

(ग) शायद डाकघर की गलती से देरी हुई होगी या फिर महाशय का जीवन ही अस्त-व्यस्त और ढीला होगा।

(घ) कि मीटिंग दिए गए वक्त से दो घंटे बाद शुरू होगी। यदि चार बजे का समय है तो छह बजे शुरू होगी।

(ङ) खुशमिज़ाज रहकर और दूसरों को भी निभाकर आप अपने वक्त का जितना अच्छा उपयोग कर सकें, उतनी ही आपकी तारीफ़ है।

लिखित

1. (क) अधिकतर लोग टालमटोल करते हैं।
   (ख) 'समय नहीं मिला' कहने का फ़ैशन चल पड़ने के कारण।
   (ग) समय की विशेषता है कि न तो बढ़ाया जा सकता है और न ही घटाया जा सकता है।
   (घ) लेखक ने राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए सभी प्रांतों का भ्रमण किया था।
   (ङ) प्रसन्न रहकर और दूसरों के साथ सहयोग करके दूसरों की प्रशंसा प्राप्त की जा सकती है।

2. (क) हम मेहनत करके धन एकत्र करते हैं। अधिक मेहनत करें तो अधिक धन कमा सकते हैं लेकिन कुछ भी करके हम समय को नहीं बढ़ा सकते। इसी प्रकार कमाया हुआ धन कई कारणों से कम या बिल्कुल खत्म ही हो जाता है लेकिन कुछ भी करके समय को नहीं घटाया जा सकता। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समय का महत्त्व धन से अधिक है।
   (ख) एकता सम्मेलन मुख्य तौर पर तो ब्रिटिश सरकार के राजनैतिक दाँव-पेचों के कारण ही असफल हुआ था। इसका एक अन्य कारण मालवीय जी का समय पर न पहुँचना भी था। सम्मेलन में शामिल होने वाले लोग निराश और हताश हो गए। कई लोग तो निराश होकर बीच में ही सम्मेलन का कार्य छोड़कर चले गए। इस प्रकार समय की गैर-पाबंदी भी इसकी असफलता का एक कारण था।
   (ग) व्यक्ति का मशीनीकरण होने से कई नुकसान हो सकते हैं। ऐसा होने पर व्यक्ति अपने समय की ज़रा भी लचक नहीं रखेगा। वह मशीनों की भाँति हर कार्य निश्चित समय और निश्चित ढंग से करेगा। वह चिड़चिड़ा हो जाएगा। यदि उसे लगेगा कि कोई व्यक्ति समय बरबाद कर रहा है तो वह उस पर नाराज़ होना शुरू कर देगा।

3. (क) (*iii*), (ख) (*ii*), (ग) (*iv*), (घ) (*i*)

4. दुनिया में करोड़ों लोग हैं। सबके पास अलग-अलग चीज़ें अलग-अलग मात्रा में हो सकती हैं। किसी के पास अधिक धन हो सकता है तो किसी के पास कम। किसी के पास अधिक चीज़ें हो सकती हैं तो किसी के पास कम लेकिन समय पर यह सिद्धांत लागू नहीं होता। प्रकृति सबको बराबर समय देती है-एक दिन में 24 घंटे। अमीर को भी 24 घंटे और गरीब को भी 24 घंटे। प्रकृति किसी के साथ भेदभाव नहीं करती। अब 24 घंटों का प्रयोग करना प्रत्येक व्यक्ति के स्वयं के हाथ में है।

5. **संकेत**–आलस की भावना, काम न करने का मन, आज का काम कल पर छोड़ने की आदत, समय-तालिका न बनाना, समय का समुचित सदुपयोग न करना, क्षमता से अधिक काम करने की 'हाँ' कह देना, कुछ लोग सच नहीं बोल पाते और काम करना स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन कर नहीं पाते, काम के समय ध्यान भटकाने की आदत।

   संकेत–टालमटोल करने वाले की छवि झूठे के समान, लोग ऐसे व्यक्ति को महत्त्व देना बंद कर देते हैं, कोई उसकी बातों का विश्वास नहीं करता, समाज में कोई सम्मान नहीं रहता, वह सच भी बोले तो झूठ जैसा लगता है।

भाषा-बोध

1. (क) रुपया-पैसा; सवेरे-शाम
   (ख) गंगा-तट; राज-भक्त
   (ग) धीरे-धीरे; खड़े-खड़े
   (घ) कुछ-न-कुछ; छोटे-से-छोटा

(ङ) भाई-सा; साधारण-सी

2. (ख) वर्तमान काल, (ग) भूतकाल, (घ) भविष्यतकाल, (ङ) वर्तमानकाल

3.

शब्द		उपसर्ग	मूल-शब्द	प्रत्यय
अनुपस्थिति	–	अन	उपस्थित	इ
गैरपाबंदी	–	गैर	पाबंद	ई
अनियमितता	–	अ	नियमित	ता
राजनैतिक	–	राज	नीति	इक

4. (*i*) बच्चे-बूढ़े, (*ii*) धनी-निर्धन, (*iii*) सोते-जागते, (*iv*) भीतर-बाहर, (*v*) ऊपर-नीचे, (*vi*) स्त्री-पुरुष

5.

	संज्ञा शब्द	सर्वनाम शब्द	विशेषण शब्द
(*i*)	बातें	मुझे	कितने
(*ii*)	पत्र	वे	अस्त-व्यस्त
(*iii*)	मालवीय जी	आप	ढीला

रचनात्मक कार्य

1. स्वयं कीजिए।
2. **संकेत :** मित्रतापूर्ण व्यवहार से दूसरे भी हमारे साथ विनम्र व्यवहार करते हैं, हमें दूसरों का सहयोग मिलने लगता है, जीवन प्रेममय होता है, चारों ओर मित्रों की भीड़ नज़र आती है।
3. बच्चे अपने अनुभव से बताएँ।
4. बच्चों का मार्ग-दर्शन करते हुए उन्हें पत्र-लेखन हेतु प्रोत्साहित करें। मन के गहरे भाव, गहरा प्रेम लिखकर प्रकट किया जा सकता है।
5. स्वयं कीजिए।

5. शक्ति और क्षमा

मौखिक

(क) सुयोधन।
(ख) कि वे कायर और डरपोक हैं।
(ग) कि वह डरपोक और असाहसी है इसलिए क्षमा कर रहा है।
(घ) उन्होंने धनुष पर बाण चढ़ा लिया और जैसे ही बाण चढ़ाया समुद्र देवता हाथ जोड़कर खड़े हो गए।

लिखित

1. (क) दुर्योधन की तुलना नर-व्याघ्र (शेर-समान मनुष्य) से की गई है।
   (ख) क्षमा सक्षम या वीर पुरुष को ही शोभा देती है।
   (ग) विनम्रता की चमक शक्ति में छिपी है।
2. (क) श्रीराम तीन दिनों से सागर से प्रेमपूर्वक रास्ता माँग रहे थे। सागर ने कोई परवाह नहीं की। तब श्रीराम से रहा नहीं गया। उन्होंने धनुष-बाण उठा लिए। उनके एक ही वार से पूरा सागर सूख जाता। तभी सागर काँपता हुआ उनके चरणों में आ गिरा अर्थात सागर को प्रेम की नहीं, शक्ति की भाषा समझ आई।
   (ख) वास्तविक सहनशीलता की परिभाषा कुछ अलग ही होती है यदि कोई निर्बल सहनशीलता दिखाता है तो इसे उसकी मजबूरी भी समझा जा सकता है। सच्ची सहनशीलता वह है, जिसमें व्यक्ति बदला लेने में सक्षम तो हो लेकिन वह बदला ले नहीं अर्थात शक्तिशाली की सहनशीलता ही वास्तविक सहनशीलता है।
3. (क) (*iv*), (ख) (*iv*)
4. प्रस्तुत पंक्तियों में शक्ति का महिमा-गान हुआ है। कवि कहते हैं कि तीर अर्थात शक्ति में ही विनम्रता की चमक है। जो शक्तिशाली होता है या जिसमें जीतने की शक्ति होती है, समझौता भी उसी को शोभा देता है। उसका समझौता, उसका झुकना पूजा के काबिल होता है।
5. **संकेत**–शक्ति का प्रदर्शन ज़रूरी, ऐसा न होने पर शोषण होने की संभावना, शर्तें शक्तिशाली की ही मानी जाती है, दुनिया निर्बल को दबाने में उत्सुक रहती है, शक्तिशाली नज़र आने पर सामने वाले पर दबाव पड़ता है, वह कोई बात कहने से पहले चार बार सोचता है।

भाषा-बोध

1. (*i*) नखहीन;, (*ii*) केशहीन;, (*iii*) धनहीन, (*iv*) वस्त्रहीन;, (*v*) तेजहीन;, (*vi*) नोकहीन
2. (*i*) अ–अकुशल, अखंड; (*ii*) अनु–अनुपस्थित, अनुग्रह; (*iii*) सु–सुपुत्र, सुकोमल; (*iv*) दुस्–दुस्साहस, दुस्तर; (*v*) निस्–निस्संदेह, निस्संतान
3. (*i*) सहारा–आश्रय, संबल; (*ii*) कायर–डरपोक, भीक; (*iii*) रिपु–शत्रु, दुश्मन; (*iv*) भुजंग–विषधर, सर्प; (*v*) अनुनय–प्रार्थना, विनती
4. (*i*) मीठे-मीठे, (*ii*) ऊँचे-ऊँचे, (*iii*) छोटे-छोटे, (*iv*) पानी-पानी, (*v*) पत्ता-पत्ता, (*vi*) शहर-शहर

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** श्रीराम अपनी पत्नी सीता व अनुज लक्ष्मण सहित चौदह वर्ष के वनवास पर रावण द्वारा छल में सीता हरण, सीता को छुड़ाने के लिए राम द्वारा लंका पर चढ़ाई, युद्ध के लिए समुद्र पार करना ज़रुरी, सेना के लिए समुद्र में मार्ग चाहिए, मार्ग-प्राप्ति हेतु समुद्र से अनुनय।

2. **संकेत :** शांति संदेश लेना, श्रीकृष्ण कौरवों के पास गए थे, उन्होंने प्रस्ताव रखा था कि पाँच पाँडवों को केवल पाँच गाँव ही दे दिए जाएँ, दुर्योधन ने प्रस्ताव ठुकरा दिया, कहा–सूई की नोक बराबर धरती भी नहीं दूँगा।

3. **'गरीब की जोरु सबकी भाभी' : संकेत :** प्राचीन कहावत, इसका अर्थ है - निर्बल पर हर कोई रौब दिखाता है, अनुभव के आधार पर कहावत सच भी है, जो शक्तिशाली है वह निर्बल के शोषण के लिए तैयार बैठा है, निर्बल को कोई कुछ नहीं समझता, उसे जैसे चाहो वैसे घुमा लो, उससे कुछ भी करवा लो, उसका कैसा भी हक दबा लो.... स्वयं को निर्बल बनाना स्वयं के प्रति गुनाह।

4. स्वयं कीजिए।

6. विध्वंस की आग

मौखिक

(क) उस दिन जापान के हिरोशिमा शहर का आसमान नीला और साफ़ था। सूरज चमक रहा था। लोग बसों और ट्राम कारों में बैठकर काम पर जा रहे थे। हिरोशिमा की सातों नदियाँ धीरे-धीरे बह रही थीं। गरमी का मौसम था। सूरज की किरणें पानी की सतह पर चमक रही थीं।

(ख) जापान के कई बड़े शहरों– टोक्यो, ओसाका और नगायो पर हवाई हमले हो चुके थे। हिरोशिमा अभी इन हमलों से बचा था। हिरोशिमा के लोग इस बात से खुश थे।

(ग) माई को जब होश आया तो उसने देखा चारों तरफ एकदम सन्नाटा था और आसमान का रंग काला स्याह हो गया था।

(घ) आग से बचने के लिए भागने वालों की लंबी भीड़ थी। सभी के कपड़े जल गए थे और वे भटकते और चिल्लाते, भूतों जैसे लग रहे थे।

लिखित

1. (क) जापान के टोक्यों, ओसाका और नगाचो पर हवाई हमले हो चुके थे।
   (ख) हिरोशिमा पर 6 अगस्त, 1945 को तथा नागासाकी पर 9 अगस्त 1945 को बम गिराए गए थे।
   (ग) नन्हीं अबाबील के पंख जल चुके थे और वह उड़ने में असमर्थ थी।
   (घ) उस हमले में कोरिया, चीन, रूस, इंडोनेशिया और अमेरिका के नागरिक मारे गए थे।

2. (क) हिरोशिमा के नागरिकों ने हवाई हमलों से बचने के लिए कई प्रकार की तैयारियाँ की थीं। उन्होंने पुरानी इमारतों को गिरा दिया था और सड़कों को चौड़ा कर दिया था। आग बुझाने के लिए जगह-जगह पानी का प्रबंध किया था। बमबारी की स्थिति में छिपने के लिए सुरक्षित स्थान बनाए थे। वे बाहर निकलते समय कवच और हेल्मेट पहनते थे और अपने साथ दवाइयाँ रखते थे।

   (ख) 6 अगस्त को जापान के लोग परमाणु बम हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। वे उस हमले में मारे गए लोगों के नामों को कागज़ की लालटेनों पर लिखते हैं। इन लालटेनों को जलाकर हिरोशिमा में बहने वाली सात नदियों में छोड़ते हैं। वे लालटेनें नदी के प्रवाह के साथ समुद्र तक पहुँच जाती हैं और विलीन हो जाती हैं।

   (ग) माई की माँ एक ज़िम्मेवार महिला थी और अपने परिवार से प्रेम करती थी। बम गिरने पर उनके घर में भयंकर आग लग गई और माई के पिता उस आग में फँस गए। अपनी जान की परवाह न करते हुए माई की माँ उन लपटों में घुस गई और अपने पति को सुरक्षित बाहर ले आई। इतना ही नहीं, वह उन्हें अपनी पीठ पर लादकर ठंडक के लिए नदी पर ले गई।

3. (क) (*i*), (ख) (*iii*), (ग) (*iii*)

4. इसमें कोई शक नहीं कि लोगों के लिए 'भीड़' शब्द का प्रयोग होता है, जबकि रुई व गेहूँ आदि के लिए 'ढेर' शब्द का लेकिन यहाँ लोगों की जैसी हालत हो रही थी, उसके लिए 'ढेर' का शब्द ही उपयुक्त लगता है। लोग एक-दूसरे के ऊपर गिरे पड़े थे। जीवित और मृत लोगों की हालत लगभग एक जैसी हो रही थी। जो जीवित थे, वे भी मृत की तरह निढाल हो रहे थे।

5. **संकेत**–युद्ध के साए में जीने वाले भयंकर तनाव से गुज़रते हैं, हर समय मौत या घायल होने का भय, परिवार के प्रत्येक सदस्य की सुरक्षा की चिंता, सदा समाचार चैनल देखने से अतिरिक्त तनाव, अफ़वाओं का ज़ोर।

भाषा-बोध

1. **विशेषण रूप में 'और'**–मुझे **और** सब्ज़ी चाहिए।
   क्रिया-विशेषण रूप में 'और'–थोड़ा-सा **और** चलो।
   योजक रूप में 'और'–वह आँधी तरह आया **और** तूफ़ान की भाँति गया।

2.

विशेषण	**क्रिया-विशेषण**	**योजक**
लंबी	इधर-उधर	कि
बहुत-से	सीधे मुँह के बल	और

पूरे	ऊपर
कुछ	हर तरफ़
कमज़ोर	
बाकी	ढेर

3. (*i*) बॉल, (*ii*) हॉल, (*iii*) मॉल, (*iv*) वॉच, (*v*) कॉलेज, (*vi*) डॉल

4. (क) किरण–रश्मि, साधारण–आम, आवाज़–ध्वनि, प्रार्थना–विनती, दुनिया–संसार, विलीन–लुप्त
   (ख) कमज़ोर–ताकतवर, मंद–तीव्र, गहरा–उथला, साधारण–विशेष, काफ़ी–थोड़ा, सन्नाटा–शोर

रचनात्मक कार्य

1. **युद्ध और इसके दुष्प्रभाव : संकेत :** युद्ध एक मानवीय आफ़त, विस्तृत दुष्प्रभाव, जीवन अस्त-व्यस्त, आवश्यक चीज़ों का अभाव, महँगाई, स्वतंत्रता पर रोक, तनाव, मौत का भय।
2. बच्चों का मार्ग-दर्शन करें।
3. **संकेत :** युद्ध एक : संकट अनेक, युद्ध एक आफ़त है : मानवता पर लानत है, लड़ाई मिटाओ : प्यार जगाओ।
4. कार्यकलाप हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करें।

7. टोपी

मौखिक

(क) जहाँ जाते साथ जाते, हँसते, रोते, खाते-पीते और एक साथ ही सोते।
(ख) एक बावरे की, जिसे एक चाबुक पड़ा हुआ मिल गया था।
(ग) क्योंकि धुनिया को मज़दूरी के साथ-साथ आधी रूई भी मिल रही थी।
(घ) क्योंकि उसे राजा के लिए बागा बुनना था।
(ङ) राजा होकर भी उसकी टोपी इतनी सुंदर नहीं थी जितनी गवरइया की थी। अंत में उसी टोपी को पाकर राजा ने अपने आपको दिलासा दिया।

लिखित

1. (क) मानव द्वारा नए-नए लिबास सिलवा लेने को गवरा ने मानव को पोंगापन ठहराया।
   (ख) गवरइया को टोपी सिलवाने के लिए रुई का एक फाहा मिल गया था इसलिए वह खुशी के मारे घूरे पर लोटने लगी।
   (ग) गरीबी के कारण धुनिया की हालत बहुत खराब थी। भयंकर सरदी में भी फटी-पुरानी मिर्जई पहने हुए था।
   (घ) चिड़िया ने सोचा कि एक बार इस देश के राजा का भी जायज़ा लेना (निरीक्षण करना) चाहिए, जिसके लिए इतने सारे काम होते हैं।
   (ङ) टोपी देखने में अति सुंदर थी इसलिए राजा चाहकर भी टोपी को मसल न सका।
2. (क) गवरइया बहुत समझदार थी। वह कारीगरों का स्वभाव व ज़रूरत को समझती थी। हर कारीगर अपने हुनर की उचित कीमत चाहता है। वह उन्हें गवरइया से मिली। उचित कीमत (मज़दूरी) देने के कारण गवरइया को कारीगरों का सहयोग मिलता चला गया।
   (ख) कहानी में वर्णित राजा को अच्छा नहीं कहा जा सकता। एक अच्छे राजा का फ़र्ज़ होता है कि वह अपनी प्रजा को अपनी संतान के समान समझे। उनके दुख-दर्द दूर करे। उल्टे राजा यहाँ अपनी प्रजा के लिए सिर-दर्द बना हुआ था। वह कारीगरों से मुफ़्त में काम कराता था।
   (ग) कहानी की चिड़िया एक सच्ची प्रेरक का काम करती है। वह पाठकों को संदेश देती है कि हर बड़े काम की शुरुआत छोटी ही होती है। निरंतर मेहनत करते जाने से कोई काम अधूरा नहीं रहता। बस आदमी को अपना लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने को जुट जाना चाहिए।
3. (क) (*ii*), (ख) (*iv*), (ग) (*i*)
4. (क) यह बहुत गहरा कथन है। ज़्यादा सोच-विचार करने वालों पर यह एक कटाक्ष है। बहुत ज़्यादा सोच-विचार करने वाले बस सोच-विचार ही करते रह जाते हैं। वे हर चीज़ में मीन-मेख निकालते हैं, तर्क-वितर्क करते हैं। साहसी लोग कुछ सोचते हैं, निश्चय करते हैं और अपने काम में जुट जाते हैं।
   (ख) बुज़ुर्गों की कही हुई यह बहुत पुरानी कहावत है। 'जहाँ चाह' का अर्थ है–जो आप मन से करना चाहते हो। जिसे करने के लिए आपका अंग-अंग उत्सुक है। 'वहाँ राह' का अर्थ है–उसे करने के लिए रास्ते खुलते चले जाते हैं। पूरी प्रकृति आपको सहयोग देने लगती है। पक्के निश्चय से सोचा हुआ काम कभी अधूरा रहता ही नहीं।
5. **संकेत**–कारीगर किसी भी देश की रीढ़ होते हैं, वे अपने हुनर, अपनी तकनीक से नई-नई चीज़ें बनाते हैं, देश के लोगों की ज़रूरतें पूरी करते हैं, यदि उन्हीं को उचित मज़दूरी नहीं मिलेगी तो वे पूरी लगन, पूरे उत्साह से कार्य नहीं करेंगे, चीज़ों की गुणवत्ता (Quality) में गिरावट आएगी, कई चीज़ें विदेश से मँगवानी पड़ेंगी, देश पर आर्थिक बोझ बढ़ेगा, पूरा देश गरीबी की चपेट में आ सकता है।

चिड़िया ने दरज़ी को बिलकुल मज़दूरी देने की बात कही थी। चिड़िया की बात सुनकर वह तुरंत उसके लिए काम पर जुट गया। वह मन से प्रसन्न था। इतनी मज़दूरी उसे पहले कभी न मिली थी और जब किसी कारीगर को उचित मज़दूरी मिलती है तो वह दुगुने जोश से काम करता है। उत्साह-स्वरूप कुछ-न-कुछ अतिरिक्त सेवा देने को भी वह तैयार हो जाता है।

भाषा-बोध

1. (*i*) **बाज आना** (आदत छोड़ना)– अब तुम अपनी शरारतों से बाज आ जाओ, नहीं तो यहाँ से भगा दिए जाओगे।
   (*ii*) **धुन का पक्का होना** (दृढ़ निश्चयी होना)– आखिर चिड़िया टोपी सिलवाकर ही रही। वह धुन की पक्की थी।
   (*iii*) **आपे में न रहना** (बहुत क्रोधित होना)– गुल्लू ने टुल्लू का कुरता फाड़ दिया तो टुल्लू आपे में न रहा।
   (*iv*) **अक्ल चकराना** (उलझन में पड़ जाना, कुछ समझ न आना)– आज तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो। क्या तुम्हारी अक्ल चकरा रही है।

2.

शब्द	मूल-रूप	शब्द	मूल-रूप
मानुस	मनुष्य	इत्ते	इतने
फ़िकर	फ़िक्र	जुरती	जुड़ती
मजूरी	मज़दूरी	मुलुक	देश
मल्लार	मल्हार	खमा	क्षमा
दसरतन	दसरत्न	सकत	शक्त

3. (ख) लगता है आज लटजीरा चुग गए हो।
   (ग) क्या (तू) जानती है, एक टोपी के लिए कितनों का टाट उलट जाता है?
   (घ) वह तैयार न हुआ।
   (ङ) इस रुई के फाहे को धुनो।
4. (*i*) चलते-फिरते, (*ii*) खाते-पीते, (*iii*) पढ़ते-लिखते, (*iv*) देखते-दिखाते, (*v*) ओढ़ते-पहनते, (*vi*) सोते-लेटते
5. (क) घर्र-चों, घर्र-चों; (ख) तन्न-तन्न; (ग) कच्च-कच्च; (घ) सर्र-सर्र; (ङ) खटाक-खट, खटाक-खट

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** लेखक द्वारा हाथ से लिखना, टाइपिस्ट द्वारा कम्प्यूटर पर टाइप करना, प्रिंट-आउट निकलना, प्रूफ़ रीडिंग होना, फ़िल्में बनना, फ़िल्मों से प्रिंटिंग के लिए प्लेटें बनना, प्रिंटिंग होना, बाइंडिंग होना, पुस्तक के रूप में आपके हाथ में पहुँचना। [आजकल आधुनिक तकनीक से इन कार्यों में से भी कई कार्य जैसे– फ़िल्में बनना, प्लेटें बनना आदि समाप्त हो चुके हैं।]
2. बजट तैयार करने हेतु बच्चों का मार्ग-दर्शन करें।
3. **संकेत :** निरंतर और निरंतर मेहनत करना, अपने-आपको तरोताज़ा रखना, 'काम के समय काम और आराम के समय आराम' सिद्धांत का पालन करना।
4. **संकेत :** असंगठित वर्ग के मज़दूरों का (सरकार द्वारा) पंजीकरण किया जाए, उनकी न्यूनतम दिहाड़ी निश्चित की जाए, उनका बीमा किया जाए, उन्हें शिक्षित एवं जागरूक किया जाए, नियम-कानूनों का उल्लंघन करने वाले मालिकों को दंडित किया जाए।

8. नीम-हकीम खतरे जान

मौखिक

(क) लेखक बीमार इसलिए होना चाहते थे कि खिलाई-पिलाई भी बढ़िया होती और चार मेहमान भी आते हाल पूछने।
(ख) एक के बाद एक डॉक्टर बदले जा रहे थे, दवाईयाँ बदली जा रही थी। और तो और जो भी उन्हें देखने आता एक नया नुस्खा बता कर जाता।
(ग) गर्म पानी में दवा डालकर पिलाई और पेट में एक सुई लगाई।
(घ) किसी ने एक्स-रे का नाम लिया, किसी ने जल-चिकित्सा का, किसी ने होम्योपैथी का, किसी ने प्राकृतिक चिकित्सा का।
(ङ) नानी की मौसी ने कहा ''यह किसी चुड़ैल का फसाद है। देखो न इसकी बरौनी कैसी खड़ी है''?

लिखित

1. (क) लेखक पैंतीस वर्ष के स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति हैं।
   (ख) पेट-दर्द होने पर लेखक ने अमृतधारा का सेवन किया।
   (ग) वैद्य जी द्वारा बोले गए शब्द लेखक की समझ से परे थे इसलिए वे आप्टे का कोश देखना चाह रहे थे।
   (घ) लेखक ने कहा कि वे (हकीम साहब) न केवल बनारस में बल्कि पूरे देश में लुकमान की तरह प्रसिद्ध हैं। (लुकमान यूनान के विश्व-प्रसिद्ध हकीम थे।)
   (ङ) लेखक ने डॉक्टरों की तुलना चुड़ैल से की।
2. (क) पेट-दर्द होने से पहले लेखक ने बारह पूरियाँ, आधा पाव मलाई और छह मोटे-मोटे रसगुल्ले खाए थे। लेखक की नज़र में यह खाना 'थोड़ा ही' था।
   (ख) वैद्य जी की वेशभूषा और रंग-ढंग ही कुछ

ऐसा था कि लेखक को लगा कि वे (वैद्य जी) कुश्ती लड़कर आ रहे हैं। वैद्य जी ने धोती पहनी हुई थी और कंधे पर एक सफ़ेद दुपट्टा डाल रखा था। इसके अतिरिक्त उनके शरीर पर एक जनेऊ मात्र था। यह जनेऊ इतना मटमैला था कि इसे देखकर लेखक को ऐसी शंका हुई कि कविराज जी कुश्ती लड़कर आ रहे है।

(ग) बच्चे अपनी मर्ज़ी से कोई भी दृश्य चुन सकते हैं। दो उदाहरण हैं–वैसे तो इस व्यंग्य के सारे ही दृश्य चुटीले हैं लेकिन मुझे सबसे चुटीला दृश्य वह लगा जिसमें लेखक मिलने आने वालों का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि हर मिलने आने वाला अपने साथ एक-न-एक नुसखा भी लिए आता था। खाने के लिए सिवा जूते के और कोई चीज़ बाकी नहीं रही, जिसे लोगों ने न बताया हो।

या

...मुझे सबसे चुटीला दृश्य वह लगा जिसमें वैद्य जी लेखक की बीमारी का वर्णन करते हैं। पीड़ा से मरते व्यक्ति से ऐसी बातें करना एक मज़ाक ही है। इसीलिए लेखक ने 'आप्टे' का कोश देखने की बात कही। यह वाक्य भी हँसी लाता है। इससे भी अधिक हँसी तब आती है जब हमें पता चलता है कि वैद्य जी 'चरक', 'सुश्रुत' के श्लोक सुनाने लगे।

3. (क) (*ii*), (ख) (*i*), (ग) (*iv*)

4. (क) भारत में आयकर को एक आफ़त की तरह माना जाता है। इसके नियम-उपनियम चक्कर में डालने वाले हैं। जब यह व्यंग्य लिखा गया था, उस समय तो बहुत ही ज़्यादा। यदि कोई आयकर के चक्कर में फँस जाता था तो यह समाप्त होना तो दूर, उल्टे दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जाता था। इसीलिए लेखक ने अपने बढ़ते पेट-दर्द की तुलना आयकर से की है।

(ख) भारत एक ऐसा देश है, जहाँ राय-मशविरा देने की पुरानी परंपरा है। यदि सुनने वाला कोई बीमार मिल जाए तो कहना ही क्या! लोग एक-से-बढ़कर-एक नुसखे बताते हैं। लेखक के साथ भी ऐसा ही हुआ। लोगों ने उन्हें एक-से-एक नुसखे बताए। खाने की इतनी चीज़ें सुनने पर लेखक ने तंग होकर यह कथन कहा।

5. **संकेत**–आवश्यकता से अधिक खाना, भूख न होने पर भी केवल स्वाद के लिए खाना, बेसमय खाना, पेट गड़बड़, अपच, खाने-पीने पर नियंत्रण रख लेखक इस बीमारी से बच सकते थे।

संकेत–इसके कई कारण हो सकते हैं, हो सकता है कि वह दवाई किसी अन्य स्थान से न मिलती हो या बहुत दूर मिलती हो, किसी दुकान की ख्याति इतनी ज़्यादा हो कि वहाँ नकली दवाई मिलने का खतरा न हो (भारत में कई लालची दुकानदार नकली दवाइयाँ भी बेच देते हैं), हो सकता है कि इसमें किसी को लाभ विशेष होता हो, आजकल ऐसा चलन नहीं है, डॉक्टर मात्र दवाई का नाम लिख देते हैं, रोगी जहाँ से चाहे खरीदे, कुछ डॉक्टर अपने पास रखी दवाओं से दे देते हैं।

भाषा-बोध

1. (*i*) **अतएव** : मैं गरीब व्यक्ति हूँ, **अतएव** मेरी प्रार्थना पर विशेष ध्यान दीजिए।
   (*ii*) **किंतु** : कबूतर ने कोशिश तो बहुत की, **किंतु** उड़ न पाया।
   (*iii*) **ताकि** : कृपया जल्दी कीजिए **ताकि** समय पर काम हो सके।
   (*iv*) **कि** : मैं इतना ही कहूँगा **कि** इसमें मेरा कोई दोष नहीं।
   (*v*) **और** : वह बाहर निकला **और** दौड़ पड़ा।

2. **उर्दू शब्द–** सूरत–शक्ल, फ़ायदा–लाभ, ज़रा–थोड़ा, बीबी–पत्नी, मरीज़–रोगी
   तत्सम शब्द– आयु–अवस्था, इच्छा–लालसा, अवश्य–ज़रूर, साधारण–आम, भय–डर

3. (ख) में – कारक, (ग) की – कारक, (घ) को/के लिए – कारक, (ङ) मे – कारक

4. (*i*) खाना–खिलवाना, (*ii*) कहना–कहलवाना, (*iii*) समझना–समझवाना, (*iv*) पहुँचना–पहुँचवाना, (*v*) मरना–मरवाना, (*vi*) भेजना–भिजवाना

रचनात्मक कार्य

1. बच्चे स्वयं अपना अनुभव बताएँ।

2. **संकेत :** बीमारी में व्यक्ति चिड़चिड़ा, कुछ अच्छा न लगना, मजबूर हो आराम करना, बिस्तर पर लेटे रहना, कई प्रकार के परहेज़ करना, खेल-कूद में भाग न ले सकना, स्वस्थ व्यक्ति प्रसन्न, खेलना-कूदना, नाचना-गाना, खाना-पीना, मूड फ्रेश।

3. **संकेत :** जंक फूड केवल पेट भरते हैं, उनसे शरीर को कोई पोषण नहीं मिलता, जंक फूड को पचाने के लिए पेट को भारी मेहनत करनी पड़ती है, इसलिए निरंतर सेवन से पाचन-शक्ति कमज़ोर, शरीर कई बीमारियों का शिकार।

प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स हेतु : डिटॉल, कैंची, सूई, चिमटी, रुई, पट्टियाँ, कुछ दर्द-निवारक गोलियाँ (डॉक्टर की सलाह से)

9. आप किनके साथ हैं?

मौखिक

(क) जो साहसी, निर्भीक, स्वाभिमानी और त्यागी हैं। ऐसे लोग किसी अन्याय के सामने झुकते नहीं बल्कि न्यायोचित अधिकार के लिए संघर्ष करते हैं। जो कर्मशील हैं, संघर्ष करते हैं, सत्यवादी हैं और स्वावलंबी भी हैं।

(ख) निर्भय होकर।

(ग) हार-जीत की।

(घ) वीर पुरुष यह इंतज़ार नहीं करते कि कब ग्रह-नक्षत्र उनके हिसाब से होंगे कि उन्हें कार्य करने पर सफलता ही मिलेगी। वे तो हार-जीत सोचे बिना कर्म करने में डट जाते हैं और जो समय पर कार्य करता है सफलता उसे ही मिलती है।

लिखित

1. (क) इसका अर्थ है– न्याय के लिए अन्याय से लड़ना, साहस और स्वाभिमान से जीना।
   (ख) वीर पुरुष अपना उचित अधिकार नहीं छोड़ सकते और चुपचाप अत्याचार नहीं सह सकते।
   (ग) सत्पथ वही है, जिस पर वीर साहस और स्वाभिमान से बढ़ते चले जाते हैं।
2. (क) वीर पुरुष ही ऊँचे सपने देखते हैं। उन्हें पूरा करने के लिए उनमें विशेष योग्यता यह होती है कि वे परिस्थितियों से समझौता नहीं करते। वे अपने संकल्प पर दृढ़ रहते हैं और दूरदर्शी होते हैं।
   (ख) यह कविता वीर पुरुषों का गुणगान करती है। वीर पुरुष दृढ़ संकल्प वाले, साहसी, निर्भीक, स्वाभिमानी व त्यागी होते हैं। वे एक तूफ़ान के समान होते हैं, जो किसी भी बाधा को कुछ नहीं समझते। ऐसे लोग अन्याय के विरुद्ध अपने प्राणों की बाज़ी तक लगा देते हैं।
3. (क) (*iv*), (ख) (*i*), (ग) (*iv*)
4. ये पंक्तियाँ वीर पुरुषों की प्रशंसा में कही गई हैं। कवि एक निडर महिला के रूप में कहते हैं कि वीर पुरुष जो संकल्प करते हैं, फिर उसे पूरा करने से उन्हें रोका नहीं जा सकता। ऐसे साहसी पुरुष किसी बाधा के रोके नहीं रूकते। मैं भी ऐसे लोगों का समर्थन करती हूँ, जो साहसी और स्वाभिमानी हैं।
5. **संकेत**–किसी को मुसीबत में देखकर क्या आप उसकी सहायता करते हैं या कन्नी काटकर निकल जाते हैं; क्या आप अपने विचार बिना किसी डर के स्पष्ट कह पाते हैं; क्या अपने साथ होने वाली किसी ज़्यादती को आप चुपचाप सहन कर जाते हैं; क्या आप अपनी कही बात या दिए गए वचन पर दृढ़ रहते हैं; क्या आपके मन में साहसी, स्वाभिमानी निर्भीक, परोपकारी, कर्मनिष्ठ बनने के विचार आते हैं; आदि।

भाषा-बोध

1. (*i*) वार्षिक + उत्सव, (*ii*) लोक + उक्ति, (*iii*) पुरुष + उत्तम, (*iv*) महा + उदय, (*v*) सूर्य + ऊष्मा
2. (क) (*i*) निर्भय–निडर, निर्भीक
   (*ii*) अंतर–मन, हृदय
   (*iii*) न्यौता–आमंत्रण, निमंत्रण
   (*iv*) पैनी–तीखी, तेज़
   (*v*) तकदीर–भाग्य, किस्मत
   (ख) (*i*) भीड़ × अकेले, (*ii*) भयभीत × निर्भय, (*iii*) झगड़ा × समझौता, (*iv*) प्रकाश × तम, (*v*) मिथ्यापथ × सत्पथ, (*vi*) प्रतिकूल × अनुकूल
3. (*i*) अनुकूल, (*ii*) छप्पर (*iii*) छाती, (*iv*) तकदीर, (*v*) तुम (*vi*) तूफ़ान, (*vii*) दिकशूल, (*viii*) शमशीर, (*ix*) सत्यपथ

रचनात्मक कार्य

1. (*i*) महाराणा प्रताप, (*ii*) नेता जी सुभाषचंद्र बोस, (*iii*) लोकमान्य तिलक, (*iv*) शहीद भगत सिंह, (*v*) महात्मा गांधी, (*vi*) श्रीमती इंदिरा गांधी
2. **संकेत : सच्ची वीरता :** संकट के समय साहस दिखाना तथा किसी की सहायता करना, अन्याय से डटकर संघर्ष करना, अपने अधिकारों के लिए लड़ना, बाधाओं को हौसले से पार करना, आतंकवादी घटनाएँ कायरता का प्रतीक, हथियारबंद होकर किसी निर्दोष को छुपकर मार डालना और अपनी जान बचाने के लिए भाग जाना कायरता ही है।

10. प्रकृति का सान्निध्य

मौखिक

(क) विश्व की सबसे ऊँची सड़क पर सफ़र करने का वर्णन।

(ख) क्योंकि वह पहाड़ी रास्ता तय करके ही मनाली पहुँचे थे।

(ग) क्योंकि वहाँ कीचड़, पथरीला रास्ता और फिसलन थी।

(घ) क्योंकि रात के आठ बजे भी चारों ओर प्रकाश बिखरा था।

(ङ) लेह में ठंड से ज़्यादा रूखापन है, जिसके कारण त्वचा रूखी-सूखी हो जाती है और होंठ फट जाते हैं।

लिखित

1. (क) रोहतांग पास का रास्ता एक गड़रिए की इच्छा पर शिवजी ने तैयार किया था।
   (ख) पहाड़ का असली सौंदर्य थोड़ा खतरा उठाकर ही देखा जा सकता है।
   (ग) उनके लेख से लेखक को यह ज्ञान हुआ कि नार्वे में आधी रात को भी सूरज चमकता है।
   (घ) केलांग के अधिकतर लोग बौद्ध थे और वे लाल चोगा धारण किए हुए थे इसलिए लेखक को केलांग बौद्ध मठ जैसा लगा।
   (ङ) वहाँ पहुँचकर लेखक को लगा कि वे विश्व में सबसे ऊँचे हो गए हैं।

2. (क) मनाली से लेह का सफ़र कई दुश्वारियों से भरा है। वहाँ मौसम पल-पल बदलता है। कई स्थानों पर सड़क फिसलन-भरी है। आकाश छूती पहाड़ियों के बीच 466 किलोमीटर का सफ़र रोमांचक ही कहा जाएगा।
   (ख) रोहतांग पास (दर्रे) की सर्वोच्च ऊँचाई पर गहरी धुंध छाई हुई थी। शरीर की सूइयों की तरह कोंचने वाली ठंडी हवा चल रही थी। यह वायु चाकू की पैनी धार के समान थी। लेखक वहाँ पहुँचकर प्रसन्न तो बहुत थे लेकिन थकावट से चूर थे।
   (ग) रोहतांग पास के आस-पास बसे लोग केवल तीन-चार महीने ही काम कर पाते हैं। कुछ लोग भेड़-बकरियाँ चराते हैं, कुछ वहाँ आने वाले पर्यटकों की सेवा करते हैं।
   (घ) रोहतांग पास से चलकर लेखक को रात्रि-ठहराव के लिए केलांग पहुँचना था। उनका सफ़र जारी था। तभी अचानक उन्होंने एक तेंदुए को जीप के आगे से निकलते देखा। उन्हें जान का भय हो आया। उन्होंने तुरंत केलांग पहुँचने का अपना निर्णय पलट दिया। इसीलिए कहा गया है कि सब निर्णय अनिर्णय हो गए।

3. (क) (*i*), (ख) (*iii*), (ग) (*iv*)

4. (क) यह बात सौ प्रतिशत सही है। कई निर्णय लेते समय हम वास्तविक परिस्थितियों से अनजान होते हैं। कई बार ऐसी हालत हो जाती है कि किसी निर्णय के कारण जान जाने का खतरा सामने आ खड़ा होता है। तब जान बचाना महत्त्वपूर्ण हो जाता है और निर्णय पर डटे रहना गौण। ऐसा करने में व्यावहारिक बुद्धिमानी भी है, यदि उद्देश्य बहुत महत्त्वपूर्ण न हो तो।
   (ख) भारत विभिन्नताओं का देश है। यहाँ अनेक ऐसे दुर्गम स्थल भी हैं जहाँ लोग निवास करते हैं। वे लोग अपने रीति-रिवाज़ों, अपनी परंपराओं का पालन करते हैं। अपने लोकगीत गाते हैं। ऐसी परंपराओं व लोकगीतों में प्राचीन भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं। इसीलिए कहा है कि ऐसे ही लोग भारत और भारत की संस्कृति को ज़िंदा रखे हुए हैं।

5. **संकेत**–पहाड़ का असली सौंदर्य जंगलों, घाटियों में निहित; बर्फ़बारी में पहाड़ का नैसर्गिक सौंदर्य; ऐसे में भू-स्खलन, भयंकर ठंड, फिसलन-भरे रास्ते खतरे का सबब; इनसे दूर रहकर पहाड़ का असली सौंदर्य देखा नहीं जा सकता; एहतियात (सावधानी) ज़रूरी।

भाषा-बोध

1. (*i*) पर्वतीय, (*ii*) रोमांचक, (*iii*) अनजान, (*iv*) सर्वोच्च, (*v*) प्रशासनिक, (*vi*) अविस्मरणीय

2. (*i*) **कल्पना** : मैं आज भी **कल्पना** में मनाली पहुँच जाता हूँ।
   (*ii*) **एहसास** : मुझे अपनी ज़िम्मेदारी का **एहसास** है।
   (*iii*) **दुश्वारी** : यह खाई पार करना एक **दुश्वारी** है।
   (*iv*) **रोमांच** : इस सफ़र का **रोमांच** निराला ही है।

3. (*ii*) ग्राम–ग्रामीण, ग्रामवासी, ग्रामोद्योग, ग्रामाधिकारी
   (*iii*) कथा–कथाकार, कथनीय, कथात्मक, कथानक
   (*iv*) डर–डरना, डरपोक, डराऊ, डरावना
   (*v*) भक्त–भक्ति, भक्तजन, भक्तिमान, भक्तिवाद

4. (*i*) इन – **इन** बच्चों को खेलने दो।
   (*ii*) उन – **उन** लोगों ने क्या कहा?
   (*iii*) ये – **ये** हिरन बहुत तेज़ दौड़ते हैं।
   (*iv*) वे – **वे** खंभे अभी लगे क्यों नहीं?

रचनात्मक कार्य

1. बच्चों को बोलने-बताने का अवसर दें। पत्र-लेखन हेतु मार्ग-दर्शन करें।

2. स्वयं कीजिए।

3. **संकेत** : 18 से 65 वर्ष तक की आयु में पूर्णत: स्वस्थ व्यक्तियों को, कैलाश पर्वत की यात्रा में अनेक प्रकार की दुश्वारियाँ, भयंकर ठंड, कठिन चढ़ाई, भू-स्खलन का बड़ा खतरा, ऑक्सीजन की कमी।

4. **संकेत** : अधिकतर निवासी बौद्ध, शांतिपूर्ण जीवन बिताने वाले, आपसी भाईचारा गहरा।

चित्र एकत्र करने हेतु बच्चों का मार्गदर्शन करें। इन्टरनेट पर भी कुछ चित्र दिखाए जा सकते हैं।

5.6.7. कार्य-कलाप पूर्ण करने हेतु बच्चों का उत्साह-वर्धन करें।

11. भक्ति पद्य

मौखिक

(क) नौका चलाने को।

(ख) केवट की नौका लकड़ी की बनी हुई है और वह बहुत पुरानी है। लगातार जल में विहार करने के कारण कहीं-कहीं से गल-सी गई है इसलिए वह अपनी नौका को कमज़ोर बता रहा है।

लिखित

1. (क) केवट ने चरणों की धूल का महात्म्य माना है।
   (ख) केवट के वचन सुन श्रीराम सीता की ओर देखते हुए ठहाका लगाकर हँसने लगे।
2. (क) क्योंकि वह जल के पास ले जाकर उनके पैर धोना चाहता है।
   (ख) बिना पैर धोए वह श्रीराम को नौका में नहीं चढ़ने देगा।
3. (क) (*ii*), (ख) (*iv*), (ग) (*iii*)
4. केवट कह रहा है– यह नौका ही मेरी जीविका का साधन है। मेरे छोटे-छोटे बच्चों का लालन-पालन इसी नौका के सहारे होता है। यदि यह नौका नहीं रहेगी तो वे कैसे जीवित रहेंगे।

   संकेत : भोला, निष्पाप, साधारण, भक्ति में रमा हुआ, श्रद्धा में डूबा हुआ, सेवा को तत्पर, लेकिन बुद्धिमान और चतुर।

भाषा-बोध

1. **पग** – पहले अपना बायाँ **पग** आगे बढ़ाओ।
   नाथ – ईश्वर पूरे जगत के **नाथ** हैं।
   कोमल – गुलाब की पत्तियाँ **कोमल** होती हैं।
   पवित्र – काशी हिंदुओं का **पवित्र** स्थल है।
2. (*i*) थोड़ी, (*ii*) जल, (*iii*) दिखाकर, (*iv*) धूल, (*v*) कुछ, (*vi*) लड़का, (*vii*) मुझे, (*viii*) दोष, (*ix*) पाँव, (*x*) प्रभाव, (*xi*) होता है, (*xii*) सुनकर
3. **तरनी**–नाव, नौका; **नाथ**–स्वामी, पालनहार; **घरनी**–पत्नी, घरवाली; **पाहन**–पत्थर, पाषाण; **जल**–नीर, पानी
4.

	विशेषण	विशेष्य		विशेषण	विशेष्य
(*i*)	इस	घाट	(*ii*)	पवित्र	पाँव
(*iii*)	कोमल	काठ	(*iv*)	महान	प्रभाव
(*v*)	श्रेष्ठ	वचन			

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** फ़िल्म–अखियों के झरोखों से, अतिथि तुम कब जाओगे।
2. **संकेत :** भीलनी–एक दलित महिला, प्रभु-प्रेम में दीवानी, श्रद्धा से जंगल में श्रीराम की प्रतीक्षा में, श्रीराम लक्ष्मण सहित आए, भीलनी ने उन्हें भोलेपन से चख-चखकर मीठे बेर खिलाए, वह एक भी बेर बिना चखे नहीं खिलाना चाहती थी, कहीं कोई बेर मीठा न निकला तो?... जितने प्रेम से भीलनी ने खिलाए, उतने ही प्रेम से श्रीराम ने खाए, लक्ष्मण ने भीलनी का जूठा एक भी बेर नहीं खाया।
3. **संकेत :** प्रभु श्रद्धा और स्नेह के भूखे हैं, आडंबरों के नहीं। उन्हें धन-दौलत या कीर्तन-पूजा से नहीं रिझाया जा सकता, सच्चे प्रेम और श्रद्धा से ही उन्हें अपना बनाया जा सकता है।

12. उसकी माँ

मौखिक

(क) वह किसी लाल नामक व्यक्ति के बारे में पूछने आए थे।

(ख) लाल का पिता लेखक के यहाँ ज़मीदारीं का मुख्य मैनेजर रह चुका था।

(ग) लेखक ने लाल को पढ़-लिखकर घर सँभालने के लिए समझाने की कोशिश की, बजाए कि सरकार के सुधार का विचार करने की।

(घ) कभी बूढ़ा कहकर, कभी हिमालय-से केश कहकर, माथे की गहरी रेखाओं को नदियाँ बताकर, नाक विंध्याचल पर्वत की तरह, ठोढ़ी कन्याकुमारी और छोटी-बड़ी झुर्रियां-रेखाएँ पहाड़ और नदियाँ।

(ङ) क्योंकि शुरू से ही वह बहुत हिम्मत वाली थी। छोटी-बड़ी विपत्तियाँ भी उसका कुछ न बिगाड़ सकती थी इसलिए लेखक ने लाल की माँ के लिए यह विचार प्रकट किए हैं। उसके बेटे को फाँसी होने वाली थी परन्तु वह पैर जमाए स्थिर खड़ी थी।

लिखित

1. (क) वह लाल और उसके साथियों से बेहद स्नेह रखती थी।
   (ख) एक दिन लेखक को भयानक सूचना मिली कि लाल और उसके बारह-पंद्रह साथी पकड़ लिए गए हैं।
   (ग) पुलिस ने उन पर डाके डालने, बगावत फैलाने और हत्या करने के आरोप लगाए थे।

(घ) नौकर ने लेखक को बताया कि लाल की माँ ने प्राण त्याग दिए हैं।

2. (क) लेखक एक बड़े ज़मींदार थे। उनके पास बँगला, नौकर-चाकर आदि की सुविधाएँ थीं। वे अंग्रेज़ी शासन से डरकर रहते थे और पक्के राजभक्त थे। दूसरी ओर, लाल आज़ादी का दीवाना था। वह राजभक्त नहीं, देशभक्त था। देश की आज़ादी के लिए कोई भी कुर्बानी देने को वह तैयार था। लेखक जिले षड्यंत्र समझते थे, लाल की नज़र में वह देशभक्ति थी, सच्ची देशभक्ति।

(ख) जानकी एक स्नेहमयी व समर्पित माँ थी। उसे अपने बेटे से ही नहीं बल्कि उसके सब दोस्तों से गहरा स्नेह था। वह सबकी हार्दिक मन से सेवा करती थी। लाल व उसके साथियों के पकड़े जाने पर भी वह अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटी। घर के बर्तन बेचकर भी उसने न सबको बचाने की कोशिश की। अंत में उनके प्रेम में अपने प्राण त्याग दिए। वह सचमुच पूजा के योग्य थी।

(ग) लाल लगभग बीस वर्ष का मस्त नौजवान था। वह लंबा, सुडौल, सुंदर और तेजस्वी था। वह यारों का यार और पक्का देशभक्त था। वह अपने देश को आज़ाद करवाना चाहता था, भले ही इसके लिए उसकी जान चली जाए। फाँसी की सज़ा सुनने के बाद भी उसकी मस्ती में कोई कमी नहीं आई। वह एक प्यारा बेटा भी था और अपनी माँ से बेहद प्यार करता था।

3. (क) (*i*), (ख) (*iii*), (ग) (*iv*)

4. यह कथन दृढ़ विश्वास और पक्के निश्चय को प्रकट करता है। जिस व्यक्ति के मन में जान जाने का भय न हो, जो अपने कर्तव्य पर अटल है, वही ऐसी बात कह सकता है। यह पंक्ति लाल ने लेखक से कही थी, जो उसके अभिभावक के समान थे। लेखक उसे देशभक्ति के मार्ग में जान का भय दिखाते हैं लेकिन वह ईश्वर में विश्वास रखता हुआ अपने पथ पर बढ़ता चला जाता है।

5. **संकेत :** लेखक की बात मान लेने पर युवक एक पढ़े-लिखे क्लर्क में बदल जाता, वह कानून और अंग्रेज़ी शासन से डरकर रहने लगता, हो सकता है अंग्रेज़ों का पिट्ठू ही बन जाता, युवक ने बिलकुल सही मार्ग अपनाया, मौत तो सबकी होनी ही है, देश के लिए जान लुटाने वाले अमर हो जाते हैं, ऐसे वीरों की कुर्बानियों के कारण ही भारत आज़ादी प्राप्त कर पाया।

भाषा-बोध

1.

	उद्देश्य	विधेय
(ख)	मैंने	ठंडी साँस ली
(ग)	उन्होंने	गुप्त समितियाँ कायम की थीं
(घ)	सरकार ने	सभी बातें प्रमाणित की थीं
(ङ)	लड़कों की	पीठ पर कोई न था

2. (ख) इसलिए, (ग) बल्कि, (घ) मगर, (ङ) और

3. (*i*) मातृ–हमें अपनी **मातृ**-भूमि से प्यार करना चाहिए।
मात्र–पूरी टोकरी में **मात्र** दो सेब थे।

(*ii*) जरा–**जरा** अवस्था में कई रोग हो जाते हैं।
ज़रा–**ज़रा** पीछे हटकर खड़े हो जाओ।

4. (*i*) अंधकार–तम, तिमिर, अँधेरा; (*ii*) माँ–मात, माता, जननी; (*iii*) शहर–नगर; (*iv*) निवेदन–प्रार्थना, विनती; (*v*) मर्यादा–

5. (*i*) बेरहम, (*ii*) बेखबर, (*iii*) बेडौल, (*iv*) बेचारा, (*v*) बेदखल, (*vi*) बेतुकी

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** शहीद भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, खुदीराम बोस, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फ़ाक उल्ला खाँ, मदन लाल धिंगरा

2. **संकेत :** उनके दिखाए मार्ग पर चलकर, देश से सच्चा प्रेम करके, देश की उन्नति में सहायक होकर, अपने कर्तव्य लगन से निभाकर।

3. बच्चों को मार्ग-दर्शन एवं अवसर प्रदान करें।

13. अग्नि

मौखिक

(क) अपने देश को शक्तिशाली और आत्मनिर्भर बनाने के लिए 'अग्नि' के निर्माण की आवश्यकता महसूस की गई।

(ख) उस दिन वहाँ पूरी चाँदनी रात थी। ज्वार पूरे जोरों पर था। लहरें एक-दूसरे से टकराकर शोर पैदा कर रही थीं।

(ग) 'अग्नि' की सफलता पर।

(घ) तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा, ''देश की स्वतंत्रता तथा सुरक्षा की रक्षा के लिए बिना किसी बाहरी तकनीक की सहायता के हम आत्मनिर्भर बन गए हैं। 'अग्नि प्रक्षेपण' आपके निरंतर किए गए प्रयासों का परिणाम है।''

(ङ) आत्मनिर्भर बनकर हम अपने देश को सुरक्षित रख सकते हैं।

लिखित

1. (क) 'पृथ्वी' के सफल परीक्षण से भारत एक आत्म. निर्भर राष्ट्र के रूप में स्थापित हो गया।
   (ख) 'अग्नि' का प्रक्षेपण दो बार रद्द हुआ क्योंकि कुछ बाधाएँ आ गई थीं।
   (ग) उनके दिमाग में यही प्रश्न घूम रहा था–क्या कल होने वाले 'अग्नि' प्रक्षेपण में हम कामयाब हो पाएँगे?
   (घ) उस समय के राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन तथा प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी थे।
2. (क) उन्होंने रक्षामंत्री से तोहफ़े के रूप में एक लाख छोटे पौधे माँगे। इन्हें वे आर.सी.आई. में लगाना चाहते थे ताकि दूषित न हो। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक संवेदनशील इनसान है। इससे पता चलता है कि वे वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति भी जागरूक हैं।
   (ख) 'अग्नि' की तकनीक के बारे में ऐसी सूचनाएँ फैलाई गईं कि यह परमाणु हथियार प्रणाली सिद्धांत पर आधारित है लेकिन वास्तविकता यह थी कि यह गैर परमाणु हथियार प्रणाली पर आधारित थी।
   (ग) 'अग्नि' का विरोध विदेशों में हुआ। अमेरिकी कांग्रेस ने तो मिसाइल से संबंधित तकनीक और बहुराष्ट्रीय सहायता बंद करने की धमकी तक दे डाली थी।
3. (क) (*iii*), (ख) (*iv*), (ग) (*i*)
4. (क) भारतीय वैज्ञानिक 'अग्नि' के प्रक्षेपण को सफल बनाने के लिए जी-जान से जुटे हुए थे। पूरा देश उनकी ओर आशा-भरी निगाहों से ताक रहा था। इससे पहले इस मिसाइल का प्रक्षेपण दो बार रद्द करना पड़ा था लेकिन जब यह प्रक्षेपण सफल हो गया तो सब आनंद के सागर में डूब गए। यह सचमुच किसी बुरी रात के बाद खूबसूरत सुबह में जागने जैसा था।
   (ख) वर्तमान युग तकनीक का युग है। आज के युग में न तो कुँओं से पानी खींचा जाता है और न ही तलवारों से युद्ध लड़ा जाता है। वही देश आत्मनिर्भर और सुरक्षित हो सकता है, जिसके पास तकनीक है।

   तकनीक से भारी उद्योग चलाए जा सकते हैं, उपग्रह और मिसाइलें बनाई जा सकती हैं। तकनीक में पिछड़ापन वास्तव में परतंत्रता की ओर ले जाता है।
5. **संकेत :** दुनिया में कोई ऐसा काम शायद ही हो, जिसकी आलोचना न होती हो, यदि आलोचना के डर से उचित काम छोड़ दिया जाए तो शायद ही कोई काम हो सके, ऐसी हालत में कोई भी व्यक्ति समुचित तरक्की कर ही नहीं सकता, ज़रूरत यह है कि व्यक्ति / देश अपनी ज़रूरतों पर विचार करे, लक्ष्य निश्चित करे और उसे पाने में जी-जान से जुट आए, कार्य सफल होने पर सबकी ज़ुबान पर ताला लग जाता है।

संकेत : कोई कार्य सफल होने पर मन में प्रसन्नता के भाव उठते हैं, स्वाभिमान जागता है, आत्मविश्वास बढ़ता है, निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है, काम करने का उत्साह बढ़ता है, समाज / संसार में मान-सम्मान बढ़ता है।

भाषा-बोध

1. (क) तरह-तरह की, (ख) अत्यंत, (ग) एक लाख, (घ) कई, (ङ) एक
2. (*i*) सुरक्षा + इत, (*ii*) स्थापना + इत, (*iii*) निर्धारण + इत, (*iv*) प्रक्षेपण + इत, (*v*) निर्माण + इत
3. (*i*) प्रोफ़ेसर, (*ii*) डॉक्टर, (*iii*) पंडित, (*iv*) बेचेलर ऑफ़ आर्टस, (*v*) मास्टर ऑफ़ आर्टस, (*vi*) कृपया पृष्ठ उलटिए
4. (ख) स्त्रीलिंग, एकवचन; (ग) पुल्लिंग, एकवचन; (घ) स्त्रीलिंग, एकवचन; (ङ) स्त्रीलिंग, एकवचन
5. (*i*) निर्माण, (*ii*) प्रक्षेपण, (*iii*) राष्ट्र, (*iv*) आत्मनिर्भर, (*v*) निर्धारित, (*vi*) प्रकट, (*vii*) केंद्र, (*viii*) समर्पण, (*ix*) पूर्वज, (*x*) प्रधानमंत्री

रचनात्मक कार्य

1. स्वयं कीजिए।
2. **संकेत :** मिसाइलें देश पर होने वाले आक्रमण को विफल करने में सक्षम, शत्रु पर सटीक हमला कर सकती है, स्वयं का कम-से-कम और शत्रु का अधिक-से-अधिक नुकसान होता है, आज के युग में मिसाइलों के बिना देश की रक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती।
3. स्वयं कीजिए।
4. स्वयं कीजिए।
5. **संकेत :** युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन देकर, उन्हें अधिक-से-अधिक सुविधाएँ देकर, उनमें देश-प्रेम की भावना जगाकर।
6. कक्षा में सब बच्चों को एक मिनट के लिए खड़ा करके यह वचन दोहरवाएँ।

14. मास्टर साहब

मौखिक

(क) लेखक प्रतिष्ठित कॉलेज के प्रिंसिपल हैं। उनकी विद्वता और मौलिकता की अच्छी प्रतिष्ठा है।

(ख) मास्टर साहब की मासिक आय 25 रुपये थी। जिसमें कि परिवार का भरण-पोषण आसान नहीं था। जब एक दिन लेखक के पैर में चोट लग गई तो उन्होंने अपनी धोती में से पट्टी फाड़कर बाँधी। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि नई धोती कैसे आएगी। इसीलिए लेखक ने कहा कि वे बहुत उदार थे।

(ग) मिडिल स्कूल से यह स्कूल हाई स्कूल बन गया था। स्कूल की इमारतें बड़ी और सुंदर बना दी गई थीं। एक सुंदर फुलवारी थी। सब नया होने पर भी एक पुराना अवशेष था, वह था मास्टर साहब का वहाँ विद्यमान होना।

(घ) लेखक ने देखा कि मास्टर साहब एक कुरसी पर बैठे-बैठे ऊँघ रहे हैं और उनके सामने घास पर बैठे हुए चौथी जमात के छोटे-छोटे बच्चे मनमाना व्यवहार कर रहे हैं और शोर मचा रहे हैं।

(ङ) खेत में शीशम के एक पेड़ की घनी छाया के नीचे मास्टर साहब कोई कपड़ा तक बिछाए बिना सोए हुए थे।

लिखित

1. (क) लेखक की चंचलता, छोटे कद, तेज़ चाल और चमकीली आँखों के कारण उनका नाम 'विनायक' प्रसिद्ध हुआ।

   (ख) लेखक भूगोल की कक्षा में प्रथम रहते थे, इसलिए मास्टर साहब ने उन्हें अपनी कक्षा का मॉनीटर बना रखा था।

   (ग) उन दिनों गरमी भगाने के लिए रस्सी से खींचकर पंखे चलाए जाते थे।

   (घ) लेखक ने कभी ऐसी कल्पना न की थी कि उन्हें अपने मास्टर साहब के साथ कठोरता से पेश आना पड़ेगा।

   (ङ) धरती भयंकर रूप से तप रही थी और लेखक नंगे पैर, नंगे सिर चल रहे थे इसलिए उन्हें ऐसा लगा।

2. (क) मास्टर साहब को लेखक पर बहुत गर्व था। वे उनके प्रिय शिष्य थे। इस कारण वे लेखक की नियुक्ति से प्रसन्न थे। लेखक उनके खिन्न होने का भी कारण था। वास्तव में, मास्टर साहब कुछ आलसी तबीयत के थे। इस कारण उन्हें सब हेडमास्टरों से फटकार खानी पड़ी थी। अब उन्हें यह डर सता रहा था कि कहीं अपने ही शिष्य से फटकार न खानी पड़ जाए।

   (ख) ऐसे कई दृश्य हैं। विद्यार्थी किसी भी एक दृश्य का चयन कर सकते हैं। एक उदाहरण है–वैसे तो इस कहानी में प्रभावित करने वाले अनेक दृश्य हैं। मगर मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है उस दृश्य ने जिसमें लेखक अपने मास्टर साहब से खेत में मिलते हैं। वह दृश्य बहुत भावपूर्ण है। उसमें एक शिष्य की अपने अध्यापक के प्रति सच्ची श्रद्धा प्रकट होती है। अध्यापक भी कड़वी बात को भुलाकर उन्हें सच्चे मन से गले लगाते हैं।

3. (क) (*ii*), (ख) (*iii*), (ग) (*iv*)

4. अपने स्कूली जीवन से सबकी यादें जुड़ी होती हैं। लेखक की भी जुड़ी हुई थीं। उन्हें याद है कि कैसे स्कूल में सब उन्हें 'विनायक चूहा' कहकर बुलाते थे। बाद में तो बच्चों ने उनके प्वांइटर का भी नाम रख छोड़ा था–चूहे की मूँछ। इस प्रकार अनेक घटनाएँ भले ही पुरानी हो चुकी हैं लेकिन मास्टर साहब से उनका रिश्ता फिर जुड़ गया था। लेखक मास्टर साहब के स्कूल में हेडमास्टर बनकर पहुँच गए थे।

5. **संकेत :** सम्मानजनक व्यवहार, आत्मीय संबंध, सुविधाएँ बढ़ाने का प्रयत्न, उनकी समस्याओं के समाधान की कोशिश, सबका सहयोग प्राप्त करने का प्रयास, शिक्षा को उच्चतम स्तर प्रदान करने की कोशिश

भाषा-बोध

1. (*i*) सदा उनसे **हँसकर सम्मानपूर्वक** बात करता हूँ।
   (*ii*) अध्यापक मुझसे **अदब के साथ** पेश आते हैं।
   (*iii*) उन दिनों कभी-कभी मास्टर साहब ही मुझे **प्यार से पुचकारकर** आश्वासन दिया करते थे।

2. अव– (*i*) अवगुण, (*ii*) अवचेतन, (*iii*) अवगत, (*iv*) अवधारण
   बद– (*i*) बदनसीब, (*ii*) बदतमीज़, (*iii*) बदनाम, (*iv*) बदसूरत

3. (ख) **से**–में, (ग) **में**–पर, (घ) **में**–पर, (ङ) **के दिन**–को

4. (*i*) वार्षिक, (*ii*) प्रत्यक्ष, (*iii*) असहनीय, (*iv*) कामचोर, (*v*) निष्पक्ष, (*vi*) निर्भय

रचनात्मक कार्य

1. **मेरे प्रिय अध्यापक : संकेत :** हिंदी अध्याक मेरे प्रिय अध्यापक, 35 वर्षीय, स्वस्थ, अनुभवी, हँसमुख, समय के पाबंद, ज्ञानवान, उनके पास हर समस्या का समाधान, बच्चों का उत्साहवर्धन, सर्वप्रिय।

2.3.4.5. बच्चे स्वयं करें।

6. **संकेत :** बच्चों का पहनावा–कुरता-पाजामा-अचकन-टोपी आदि; भाषाएँ–हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू तथा स्थानीय भाषाएँ; धेला, पाई, टका, आना, दोआना, चार आना आदि सिक्कों का प्रचलन; कक्षाएँ पेड़ों के नीचे; कक्षा के कमरों में कोई पंखा नहीं; कलम-दवात व कलम-तख्ती का चलन; शरारतों पर सख्त सज़ा।

15. कर्मवीर

मौखिक

(क) 'देवों की बस्ती' का अर्थ है स्वर्ग। जहाँ सभी देवता निवास करते हैं। मज़दूर को स्वर्ग से कोई मतलब इसलिए नहीं है क्योंकि मज़दूर ने स्वयं स्वर्ग से सुंदर मकान खड़े किए हैं।

(ख) अपनी मेहनत और लगन से लोगों के सपनों से भी सुंदर मकानों को बनाकर धरती को सुंदर बनाते रहे हैं।

(ग) किसान खुद भूखे रहकर भी दुनिया के लिए अन्न उगाने में लगे रहते हैं। वे खुद भूखे रहकर भी दूसरों को भरपेट खाना मिल सके इसके लिए कड़ी मेहनत करते हैं।

लिखित

1. (क) मज़दूर सदा झोंपड़ियों में रहता आया है।
   (ख) समाज के संपन्न वर्ग का कर्तव्य बनता है कि वह मज़दूर के हितों की चिंता करे अर्थात उसकी भलाई करे।
   (ग) मज़दूर के पास अपने सुख के लिए सामान जुटाने का समय नहीं है।

2. (क) मज़दूर ने कई कार्यों के माध्यम से अपना आत्म-विश्वास प्रकट किया है। उसने खंडहरों को महल बनाया। इनके लिए उसने तबाही मचाने वाले बादलों और भूचाल आदि को भी कुछ नहीं समझा अर्थात जब घनघोर वर्षा होती रही या आँधी-तूफ़ान चलते रहे, वह तब भी अपने काम में जुटा रहा।
   (ख) यह पूरी कविता मज़दूरों के जीवन-वृत्त के चारों ओर घूमती नज़र आती है। मज़दूर गरीबी में पैदा होता है और गरीबी में ही मर जाता है लेकिन अपने जीवन-काल में पूरी मानवता की भलाई में जुटा रहता है। वह लोगों के लिए सुंदर भवन बनाता है, खेतों में अन्न उपजाता है। खुद दुख उठाकर दूसरों के लिए सुख के साधन जुटाता है। समाज का भी यह फ़र्ज बनता है कि वह मज़दूरों की भलाई की ओर ध्यान दे।

3. (क) (*iv*), (ख) (*i*), (ग) (*iii*), (घ) (*iv*)

4. ये पंक्तियाँ पूरे मज़दूर वर्ग की ओर संकेत करती हैं। कविता में मज़दूर ने स्वयं के लिए और स्वयं जैसे अन्य मज़दूरों के लिए 'मैं' शब्द का प्रयोग किया है। इस 'मैं' में उस जैसे अनगिनत मज़दूर आते हैं, जो पूरे विश्व में फैले हुए हैं। और वे अपने विविध कार्यों द्वारा जगत को सुंदर बना रहे हैं।

5. **संकेत :** पौराणिक कथाओं के अनुसार गंगा आकाश में थी, देवताओं ने उसे धरती पर आने की प्रार्थना की, समस्या यह थी कि यदि गंगा सीधे धरती पर उतर आती तो उसकी लहरों से प्रलय आ जाती, तब देवताओं ने शिव जी से प्रार्थना की, शिवजी ने गंगा को अपनी जटा में उतरने दिया, वहाँ से वह पतली-सुरक्षित धारा के रूप में धरती पर उतरी।

भाषा-बोध

1.

	मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
(*ii*)	प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
(*iii*)	निम्न	निम्नतर	निम्नतम
(*iv*)	उच्च	उच्चतर	उच्चतम
(*v*)	निकट	निकटतर	निकटतम
(*vi*)	लघु	लघुतर	लघुतम

2. (*i*) स्वर्गीय, (*ii*) प्यासा, (*iii*) वार्षिक, (*iv*) हितैषी, (*v*) सुखी, (*vi*) तूफ़ानी, (*vii*) प्रलयकारी, (*viii*) विश्वसनीय

3. स्वयं कीजिए।

4. (क) रेगिस्तान, (ख) महल, (ग) अगणित, (घ) सुखद, (ङ) भयप्रद

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** खेतों में फावड़ा-दराँती चलाते हुए, सड़क-निर्माण में जुटे हुए, भवन-निर्माण में जुटे हुए, नहरें खोदते हुए, सुरंगें खोदते हुए, पहाड़ तोड़ते हुए, बाज़ारों में सामान ढोते हुए, विभिन्न कारखानों में काम करते हुए

2. स्वयं कीजिए।

3. **संकेत :** विभिन्न कल्याणकारी योजनाएँ, उन्हें प्रशिक्षित कर कुशल कारीगर बनाना, उन्हें शिक्षित व जागरूक करना, उनके बच्चों की मुफ़्त शिक्षा सुनिश्चित करना, उनके लिए न्यूनतम दिहाड़ी निश्चित करना, महीने के कुछ दिनों के लिए उन्हें सुनिश्चित तौर पर कार्य उपलब्ध कराना, उनका मुफ़्त चिकित्सा बीमा व जीवन बीमा करवाना।

4. क्रम संख्या 3 में दिए गए लगभग सभी कार्यक्रम।

5. बच्चे स्वयं करेंगे।

16. राष्ट्र-धर्म

मौखिक

(क) यहाँ लेखक भारतीयों को अपना कर्तव्य याद दिला रहे हैं कि हमें अतिथियों का स्वागत और सहायता करनी चाहिए। अपने पर्यटन-स्थलों को साफ-सुथरा रखें, व्यवहार अच्छा रखें और विदेशियों से इज़्ज़त से पेश आएँ। ताकि वे जहाँ भी जाएँ भारतीयों और भारतीय-परंपरा की तारीफ़ करें।

(ख) जो लोग रेलगाड़ियों या पर्यटन-स्थलों आदि पर कुछ भी ऊट-पटाँग लिख आते हैं वे बिना कुछ किए ही विख्यात हो जाना चाहते हैं।

(ग) पर्यटन-स्थल न केवल देश की धरोहर हैं बल्कि पूरे देश का दर्पण हैं। इन्हें साफ़-स्वच्छ, आकर्षक और सुरक्षित बनाना हम सबका कर्तव्य है। पर्यटकों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करना हमारा परम-धर्म है। यही देश-धर्म कहा जा सकता है।

लिखित

1. (क) कुछ लोग अपनी वास्तविक अभिव्यक्ति पर्यटन-स्थलों पर ही कर पाते हैं।

   (ख) कुछ लोग कहीं भी नए-नवेले वाक्य या डायलॉग लिखकर अपनी सृजनात्मक शक्ति नष्ट करते रहते हैं।

   (ग) सृजनात्मकता का बढ़िया प्रदर्शन बुद्ध-बॉक्स यानी टी.वी. पर किया जा सकता है।

2. (क) जर्मन पर्यटक के मन में भारतवासियों की छवि अच्छी नहीं बनेगी। बात-ही-बात में वह कह सकता है कि भारतीय चोर हैं। इसका कारण यह है कि भारत में उसका कैमरा, जॉकेट और नकदी चुरा ली गई थी। वह चोर का नाम तो जानता नहीं। उसकी नज़र में सारे या अधिकतम भारतवासी चोर हो जाएँगे।

   (ख) अंग्रेज पर्यटक को भारत में भावभीना स्वागत मिला था। अमृतसर में एक सिख नौजवान ने उसे अपने घर रात्रि-भोज पर आमंत्रित किया था। उस नौजवान ने उसे स्वर्ण मंदिर की फ्रेम जड़ित फ़ोटो भी भेंट की थी। अब उसकी नज़र में सब भारतीय भावपूर्ण व प्रेमपूर्ण हो जाएँगे इसलिए वह अपने देश में भारतवासियों की सम्मानजनक छवि बनाएगा।

   (ग) विदेशों से जो पर्यटक आते हैं, वे पूरे देश में हर स्थान पर नहीं घूमते। वे किसी भी देश की मुख्य चीज़ें देखने आते हैं, जिनके बारे में उन्होंने सुना-पढ़ा होता है। वही स्थान पर्यटन-स्थल के रूप में विकसित होते हैं; जैसे भारत में ताजमहल, कुतुबमीनार, लालकिला, मीनाक्षी मंदिर आदि। इन स्थानों पर घूमते समय उन्हें जो कुछ चारों ओर नज़र आता है, वही उनके मन-मस्तिष्क में बस जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पर्यटन-स्थल पूरे देश को दर्पण होते हैं।

3. (क) (*iii*), (ख) (*i*), (ग) (*iv*)

4. (क) यह पंक्ति एक जर्मन पर्यटक के बारे में कही गई है। भारत में उस पर्यटक का अनुभव बुरा ही रहा। उसका कीमती सामान और नकदी चुरा ली गई थी। घर से हज़ारों मील दूर जिसका सामान चोरी हो जाएगा, उसका मन तो खिन्न होगा ही। वह जल्दी-से-जल्दी उस स्थान से निकल लेना चाहेगा और वह उदास/खिन्न मन से न कि प्रसन्नता से।

   (ख) विदेशी पर्यटक सीमित समय के लिए ही किसी देश में जाते हैं। वहाँ वह सीमित स्थानों को ही देख पाता है और सीमित लोगों से ही मिल पाता है। मान लो किसी विदेशी को एक हज़ार भारतीय मिलें और सबका व्यवहार बहुत बढ़िया हो तो उसकी नज़र में सब भारतीय अच्छे हो जाएँगे। इसी प्रकार इसके ठीक उलट भी हो सकता है यदि अधिकतर भारतीय उसके साथ अच्छा व्यवहार न करें तो। इस प्रकार हमारे क्रियाकलाप पूरे देश के क्रियाकलाप माने जाते हैं।

5. **संकेत :** पर्यटक ही अपने देश के सच्चे प्रतिनिधि, वे अपने देशवासियों को उन स्थानों तथा लोगों के बारे में बताते जो उन्होंने देखे तथा जिनसे वे मिले, उन्हीं के अनुभवों के आधार पर किसी देश के लोगों की छवि बनती है, पर्यटक ही किसी देश की संस्कृति आदि के बारे में अपने मित्रों-साथियों को बताते हैं।

भाषा-बोध

1. (ख) सर्वनाम, (ग) सार्वनामिक विशेषण, (घ) सर्वनाम, (ङ) सार्वनामिक विशेषण

2.

	शब्द		उपसर्ग	मूल-शब्द	प्रत्यय
(*i*)	विदेशी	–	वि	देश	ई
(*ii*)	सम्मानजनक	–	सम्	मान	जनक
(*iii*)	सुरक्षित	–	सु	रक्षा	इत

3. स्वयं कीजिए।

4. (*i*) अरे! यह चोट कैसे लगी।
   (*ii*) हुर्रे! कल सब पिकनिक पर जाएँगे।
   (*iii*) वाह! सब्ज़ी से अधिक स्वादिष्ट चटनी है।

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** ऐतिहासिक धरोहरों का व्यापक प्रचार-प्रसार; पर्यटकों के लिए अधिक-से-अधिक सुविधाएँ, सुरक्षित व सम्मानजनक पर्यटन के लिए उचित परिवेश।
2. **संकेत :** स्कूल के मंच, नाटकघर, आकाशवाणी, फ़िल्में आदि।
3. बच्चे स्वयं अपनी प्रतिभा के आधार पर बताएँ।
4. स्वयं कीजिए।
5. **संकेत :** सुरक्षा कर्मियों की व्यवस्था, नागरिक समितियों का गठन, विद्यार्थियों की रचनात्मक सहयोग, प्रत्येक नागरिक को इस संबंध में जागरूक करना।
6. **संकेत :** स्वामी रामकृष्ण जापान के भ्रमण पर, रेलवे स्टेशन पर फल खाने की इच्छा, अच्छे फल नहीं मिले, अपने साथी से कहा इस देश में अच्छे फल नहीं मिलते, एक जापानी युवक ने उनकी बात सुनी, वह दौड़कर बाहर से ताज़े फलों की टोकरी ले आया, उसने फल स्वामी जी को भेंट किए, युवक ने स्वामी जी से प्रार्थना की कृपया यह बात किसी से न कहिए कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते, इससे मेरे देश (जापान) की बदनामी होगी। स्वामी जी युवक की देश-भक्ति से प्रभावित हुए।

17. प्रतिज्ञा

मौखिक

(क) प्राच्य देश के बौद्ध और शूद्र राजा की कन्या से परिणय करने का प्रस्ताव।

(ख) नंद स्नातकों की परीक्षा लेने पर इसलिए अड़ा था क्योंकि वह यह जानना चाहता था कि राजकोष का रुपया व्यर्थ ही स्नातकों को भेजने में लगता है या इसका सदुपयोग होता है।

(ग) तक्षशिला से लौटा हुआ एक स्नातक ब्राह्मण था– चाणक्य। वह मगध-नरेश को ब्राह्मण-विनाश का विचार अपने मन से निकाल देने के लिए चेता रहा था।

(घ) चंद्रगुप्त ने अपने गुरुदेव का अपमान न करने के लिए कहा और कहा कि चाणक्य से अच्छी युद्ध-नीति कोई नहीं जानता।

लिखित

1. (क) प्रमाद में मनुष्य कठोर सत्य का भी अनुभव नहीं कर पाता।
   (ख) नंद चाणक्य के पिता को विद्रोही समझता था।
   (ग) नंद ने द्वारपाल को आदेश दिया कि चाणक्य को चोटी से पकड़कर दरबार से बाहर निकाल दिया जाए।
2. (क) चंद्रगुप्त चाणक्य का शिष्य था। वह जानता था कि उसके गुरुदेव (चाणक्य) ने जो बातें कही हैं, वे देशहित में हैं इसलिए उसने नंद से प्रार्थना की कि उन्हें अपमानित न किया जाए, बल्कि उनके सुझावों पर विचार किया जाए।
   (ख) राजकुमारी कल्याणी नंद की बेटी थी। वह उत्साह और आत्मविश्वास से भरी हुई युवती थी। वह साहस में भी पुरुषों से कम नहीं। वह युद्ध में सेना का संचालन करने को तैयार हो जाती है। वह स्वयं को साबित कर दिखाने वाली युवती थी।
   (ग) नंद ने भरी सभा में चाणक्य का अपमान किया था। नंद ने दरबार से बाहर निकलवा दिया था, वह भी उनकी चोटी पकड़वाकर। तब चाणक्य ने प्रतिज्ञा की कि जब तक नंद वंश का नाश नहीं हो जाएगा तब तक उनकी चोटी खुली ही रहेगी।
3. (क) (*i*), (ख) (*ii*), (ग) (*iv*)
4. यह कथन चाणक्य ने नंद से कहा था। चाणक्य सुलझे हुए और समझदार व्यक्ति थे। उनकी बातें सुनकर नंद ने उन्हें चुप रहने को कहा था। तब चाणक्य ने अपने गुरुकुल (तक्षशिला) का हवाला दिया। उन्होंने न केवल तक्षशिला से विद्या ग्रहण की थी बल्कि उन्होंने वहाँ अध्यापन कार्य भी किया था इसलिए उन्होंने यह कथन कहा।
5. **संकेत :** नंद बड़ी आयु के व अनुभवी सम्राट, नंद की बेटी चंद्रगुप्त की समान आयु की, चंद्रगुप्त के पिता मगध के पूर्व सेनापति, नंद चंद्रगुप्त की बातों से सहमत नहीं, चंद्रगुप्त ने अपने गुरु (चाणक्य) की बातों का समर्थन किया था, नंद चाणक्य के विचारों के विरुद्ध, नंद की नज़र में चंद्रगुप्त अभी नासमझ बालक।

भाषा-बोध

1. (*ii*) राजाधिराजा (अ + अ), (*iii*) रेखांकित (आ + अ), (*iv*) वार्तालाप (आ + अ), (*v*) लघूत्तर (उ + उ), (*vi*) सूक्ति (उ + उ)
2. छात्रवर्ग, अमीरवर्ग, कविजन, शिक्षकवृंद, पाठकवृंद, प्रजाजन, युवावर्ग।
3.

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**उपभेद**
घुड़सवार	घोड़े पर सवार	अधिकरण
देशप्रेमी	देश का प्रेमी	संबंध
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह	संप्रदान
यशप्राप्त	यश को प्राप्त	कर्म
हस्तलिखित	हस्त से लिखित	करण

4. (क) **फल चखाना**–यदि तुमने मेरे कुत्ते को मारा तो

वह तुम्हें फल चखा देगा।

(ख) **फल भोगना**–बुरे कर्म करोगे तो उसका फल भी भोगना पड़ेगा।

(ग) **नीचा दिखाना**–मेहुल ने बिना बात माही को नीचा दिखाने की कोशिश की तो सब मेहुल के विरुद्ध हो गए।

(घ) **सिर ऊँचा करना**–हमारी टीम ने स्वर्ण-पदक जीतकर पूरे स्कूल का सिर ऊँचा कर दिया।

5.

शब्द		उपसर्ग	मूल-शब्द	प्रत्यय
कुचक्री	–	कु	चक्र	ई
असमर्थता	–	अ	समर्थ	ता
अपमानित	–	अप	मान	इत
विद्रोही	–	वि	द्रोह	ई

रचनात्मक कार्य

1. और 2. स्वयं कीजिए।

3. **संकेत :** पिंजरे में शेर, नंद की चुनौती, पिंजरे का दरवाज़ा खोले बिना शेर को बाहर निकालने वाले को पुरस्कार, कई लोगों ने कोशिश की लेकिन असफल रहे, बालक चंद्रगुप्त दरबार में पहुँचा, कहा–मुझे मौका दिया, बालक की आयु देखकर सब हैरान, चंद्रगुप्त को मौका दिया गया, उसने पिंजरे के चारों ओर आग जला दी, शेर पिघल गया, शेर मोम से बना था लेकिन इस भेद को केवल चंद्रगुप्त ही समझ पाया था, चंद्रगुप्त ने पूरे दरबार की वाह-वाही लूटी और मुफ़्त शिक्षा का अधिकार पाया।

4. **संकेत :** रात्रिकाल चाणिक्य अपनी कुटिया में सरकारी काम-काज निपटाने में व्यस्त, एक विदेशी उनसे मिलने आया, बातचीत आरंभ होने से पहले चाणक्य ने एक दीपक बुझाकर दूसरा जला लिया, विदेशी ने कारण पूछा, चाणक्य ने बताया–पहला दीपक सरकारी था, वह सरकार के काम-काज के लिए प्रयुक्त, यह (दूसरा) दीपक मेरा अपना है, इसे मैं अपने निजी कार्यों हेतु प्रयोग करता हूँ, चाणक्य की ईमानदारी और देशभक्ति से विदेशी प्रभावित।

5. **संकेत :** कलिंग के युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया, अहिंसा का पुजारी बन गया, बौद्ध धर्म का अनेक देशों में प्रचार किया, प्रजा की भलाई के लिए अनेक-अनेक कार्य किए, युद्धों का विरोध किया।

18. माँ की ममता

मौखिक

(क) जिस स्कूल की मेट्रन अन्ना मिखाइलोवना थी उसी स्कूल का एक गरीब लड़का था माल्यूइश। अपनी माँ के लिए गरम रोटियाँ लेने के लिए माल्यूइश मेट्रन के पास पहुँचा।

(ख) अपनी माँ के लिए गरम रोटियाँ ले जाने के लिए।

(ग) माल्यूइश कहाँ होगा? कैसा होगा? उसे कैसे ढूँढ़ा जाए?

(घ) उस लड़के ने सूचना दी कि ''उस छोटी पहाड़ी के पीछे, गोदाम के पास एक कुत्ता लगातार भौंके जा रहा है।''

(ङ) क्योंकि वह समझ नहीं पा रहा था कि वहाँ इतनी भीड़ क्यों जमा हुई थी।

लिखित

1. (क) रोटियाँ बनतीं देख माल्यूइश के मन में विचार आया कि क्यों न वह अपनी माँ के लिए गरम रोटियाँ ले जाए।

(ख) मौसम खराब होता देख मैट्रन को यह चिंता हुई कि माल्यूइश घर कैसे जा पाएगा।

(ग) उन्होंने माल्यूइश को अच्छी तरह गरम कपड़े पहना दिए और उसके सिर पर गरम रूमाल बाँध दिया।

(घ) माल्यूइश की माँ इसलिए चकित रह गई कि मैट्रन के साथ माल्यूइश की बजाए कोई और लड़का था।

2. (क) ब्लैकी एक स्वामी-भक्त कुत्ता था। बर्फ़ानी तूफ़ान के समय वह माल्यूइश के साथ था। माल्यूइश एक बर्फ़ीले गड्ढे में गिरकर बर्फ़ में दब गया। तब ब्लैकी ने लगातार भौंकना शुरू कर लोगों को माल्यूइश का संकेत दिया। उसने अपनी जान की परवाह न कर माल्यूइश की जान बचाने में सहयोग दिया।

(ख) माल्यूइश काफ़ी देर बर्फ़ में दबा रहा था। वह मूर्च्छित हो गया तथा उसका पूरा शरीर अकड़ गया था। उसे होश में लाने के लिए उसके कपड़े उतार दिए गए। उसके पास तेज़ आग जलाई गई और उसके शरीर पर अच्छी तरह मालिश की गई।

(ग) इवान मैट्रन के पड़ोस में रहने वाला बालक था। जब मैट्रन को ज़रूरत पड़ी तो वह तुरंत बर्फ़ानी तूफ़ान में उनके साथ चलने को तैयार हो गया। वह अपनी छड़ी से रास्ता टटोलता हुआ आगे चला। मूर्च्छित माल्यूइश को होश में लाने के समय उसने कई काम किए। उसका चरित्र यह प्रेरणा देता है कि हमें दूसरों की सहायता के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। इवान मानवता का प्रतीक है।

(घ) अन्ना मिखाइलोवना स्कूल की मैट्रन थीं। वे माँ

की भाँति स्नेहमयी गुरु की भाँति मार्ग-दर्शक और सच्चे दोस्त की भाँति सहायक थीं। वे माल्यूइश की चिंता करती है। मन में डरावने विचार आने पर उसकी खोज में चल पड़ती है। मूर्च्छित माल्यूइश के मिलने पर उसकी जान बचाने में जुट जाती है। वे दयालु भी हैं। खुशी-खुशी माल्यूइश और उसकी माँ के लिए गरम रोटियाँ देती है।

3. (क) (*iii*), (ख) (*iv*), (ग) (*ii*)

4. अँधेरी-बर्फ़ानी रात थी। धुंध के कारण दूर-दूर तक कुछ नज़र नहीं आ रहा था। गुम हुए बच्चे की बर्फ़ीले मैदान में तलाश की जा रही थी। ऐसे में किसी संकेत को पाने के लिए कानों का ही सहारा था। उस समय मैट्रन अन्ना मिखाइलोवना के कान पूरे सचेत हो उठे थे। वे वास्तव में वायरलेस की तरह काम कर रहे थे जो मद्धम-से-मद्धम आवाज़ सुनने को आतुर थे।

5. **संकेत :** (उत्तर कई प्रकार के हो सकते हैं, यहाँ एक उदाहरण दिया जा रहा है) भले ही मौसम बर्फ़ानी है लेकिन बच्चा होशियार है, कुत्ते का साथ भी है, मार्ग जाना-पहचाना है, बच्चे के मन में एक उमंग है, वह जल्दी-से-जल्दी अपनी माँ को गरम रोटियाँ खिलाना चाहता है, बच्चे के मन में माँ के लिए कितना स्नेह है, भगवान पर भरोसा रखकर इसे जाने दो।

भाषा-बोध

1. (*i*) **सरल वाक्य :** सरदियों के दिन थे।
   (*ii*) **संयुक्त वाक्य :** बाहर अचानक बर्फ़ गिरने लगी थी और चारों तरफ़ अँधेरा छा गया था।
   (*iii*) **मिश्र वाक्य :** दावत शुरू हुई तो माल्यूइश अपने को रोक नहीं पाया।

2. (*i*) **कलेजा मुँह को आना :** उसकी बुरी हालत देखकर मेरा कलेजा मुँह को आने लगा।
   (*ii*) **मन बैठना :** जब मुझे पता चला कि दीदी को चोट लगी है तो मेरा मन बैठ गया।
   (*iii*) **साँप सूँघ जाना :** जब मोहित ने ललकारा तो सबको साँप सूँघ गया।
   (*iv*) **हाथ बँटाना :** सब बच्चों को घर के कार्यों में हाथ बँटाना चाहिए।

3. (ख) क्षणभर (कालवाचक), (ग) पूरी तरह (रीतिवाचक), (घ) कुछ (परिमाणवाचक), (ङ) झोंपड़ी तक (स्थानवाचक)

4. (*i*) गरम-गरम, (*ii*) बड़े-बड़े, (*iii*) रह-रह, (*iv*) दूर-दूर, (*v*) कभी-कभी, (*vi*) फटी-फटी, (*vii*) दौड़ा-दौड़ा, (*viii*) तरह-तरह

7. **हवा** – हवादार, हवाई, हवाबाज़
   शक्ति – शक्तिशाली, शक्तिहीन, शक्तिमान
   मन – मानसिक, मनमौजी, मनगढ़त
   उत्साह – उत्साही, उत्साहपूर्वक, उत्साहहीन

रचनात्मक कार्य

1. स्वयं कीजिए।

2. स्वयं कीजिए।

3. **संकेत :** मंच पर सबके सामने प्रस्तुत करना चाहिए, उसके साहसिक कार्य के बारे में दूसरों को बताया जाना चाहिए।

4. पाठ्य-पुस्तक के विचार को विस्तार दें।

मॉडल प्रश्न पत्र – I

1. (क) साहसी पुरुष निश्चय करने के बाद अपनी जान की परवाह नहीं किया करते।
   (ख) ऐसे व्यक्ति की क्षमा को उसकी कायरता माना जाता है।
   (ग) हिरोशिमा पर 6 अगस्त, 1945 को बम गिराया गया था।
   (घ) चिड़िया ने सोचा कि एक बार इस देश के राजा का भी जायज़ा लेना (निरीक्षण करना) चाहिए, जिसके लिए इतने सारे काम होते हैं।

2. (क) उनके पोते ने उनका सिर गर्व से ऊँचा किया था। उसने (पोते ने) प्रथम स्थान पाया था। उसे वज़ीफ़ा भी मिलने लगा था। इसी कारण वे सबसे अपने पोते का बखान करते घूम रहे थे।
   (ख) हम मेहनत करके धन एकत्र करते हैं। अधिक मेहनत करें तो अधिक धन कमा सकते हैं लेकिन कुछ भी करके हम समय को नहीं बढ़ा सकते। इसी प्रकार कमाया हुआ धन कई कारणों से कम या बिल्कुल खत्म ही हो जाता है लेकिन कुछ भी करके समय को नहीं घटाया जा सकता। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समय का महत्त्व धन से अधिक है।
   (ग) रोहतांग पास (ढर्रे) की सर्वोच्च ऊँचाई पर गहरी धुंध छाई हुई थी। शरीर की सूइयों की तरह कोंचने वाली ठंडी हवा चल रही थी। यह वायु चाकू की पैनी धार के समान थी। लेखक वहाँ पहुँचकर प्रसन्न तो बहुत थे लेकिन थकावट से चूर थे।

3. (क) (*iv*), (ख) (*iii*), (ग) (*i*), (घ) (*i*), (ङ) (*iv*)

4. (क) फाल्के फ़िल्म बनाना चाहते थे। इन्होंने एक

विदेशी फ़िल्म 'लाइफ़ आफ़ क्राइस्ट' देखी। यह फ़िल्म देखकर इनके मन में कई प्रश्न उठे। फ़िल्म की बारीकियों को जानने के लिए इन्होंने यही फ़िल्म दोबारा देखी। फ़िल्म देखते-देखते उनका दिमाग कई तकनीकों के बारे में विचार करने लगा। वे फ़िल्म तो देख रहे थे लेकिन उन्हें क्या करना है, कैसे करना है, इस बारे में वे विचार भी करते जा रहे थे।

(ख) भारत में आयकर को एक आफ़त की तरह माना जाता है। इसके नियम-उपनियम चक्कर में डालने वाले हैं। जब यह व्यंग्य लिखा गया था, उस समय तो बहुत ही ज़्यादा। यदि कोई आयकर के चक्कर में फँस जाता था तो यह समाप्त होना तो दूर, उल्टे दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जाता था। इसीलिए लेखक ने अपने बढ़ते पेट-दर्द की तुलना आयकर से की है।

(ग) ये पंक्तियाँ वीर पुरुषों की प्रशंसा में कही गई हैं। कवि एक निडर महिला के रूप में कहते हैं कि वीर पुरुष जो संकल्प करते हैं, फिर उसे पूरा करने से उन्हें रोका नहीं जा सकता। ऐसे साहसी पुरुष किसी बाधा के रोके नहीं रूकते। मैं भी ऐसे लोगों का समर्थन करती हूँ, जो साहसी और स्वाभिमानी हैं।

5. (*i*) वार्षिक + उत्सव, (*ii*) पुरुष + उत्तम, (*iii*) लोक + उक्ति, (*iv*) महा + उदय

6. (*i*) अ–असमय, (*ii*) सु–सुपथ, (*iii*) अनु–अनुपालन, (*iv*) निस्–निस्शब्द

7. (*i*) ध्वनि, (*ii*) आम, (*iii*) संसार, (*iv*) विनती

8. (*i*) रोमांचक, (*ii*) सर्वोच्च, (*iii*) अविस्मरणीय, (*iv*) अनजान

9. (*i*) **रात आँखों में काटना**–मच्छरों ने इतना काटा कि पूरी रात आँखों में कटी।

(*ii*) **दिन-रात एक करना**–फसल उगाने के लिए किसान दिन-रात एक कर देते हैं।

10. **संकेत :**

परीक्षा भवन
अ.ब.स.

तिथि.....

प्रिय दीदी,

सकुशलता के बाद समाचार ---------- पिछले हफ्ते बीमार हो गया था। निमोनिया ---------- डॉक्टर से 7 दिन दवा ली ---------- घर पर आराम किया ---------- अब बिलकुल ठीक ---------- कुछ कमज़ोरी ---------- शेष कुशल।

मेरी ओर से जीजा जी को प्रणाम, लवलीना को स्नेह।

आपका अनुज
क.ख.ग.

11. स्वयं कीजिए।

मॉडल प्रश्न पत्र – II

1. (क) हम तकनीक में आत्मनिर्भर होकर अपने देश को सुरक्षित रख सकते हैं।

(ख) उन दिनों गरमी भगाने के लिए रस्सी से खींचकर पंखे चलाए जाते थे।

(ग) रोटियाँ बनती देख माल्यूइश के मन में विचार आया कि क्यों न वह अपनी माँ के लिए गरम रोटियाँ ले जाए।

(घ) जो व्यक्ति बिना सोचे-विचारे काम करता है।

2. (क) लाल लगभग बीस वर्ष का मस्त नौजवान था। वह लंबा, सुडौल, सुंदर और तेजस्वी था। वह यारों का यार और पक्का देशभक्त था। वह अपने देश को आज़ाद करवाना चाहता था, भले ही इसके लिए उसकी जान चली जाए। फाँसी की सज़ा सुनने के बाद भी उसकी मस्ती में कोई कमी नहीं आई। वह एक प्यारा बेटा भी था और अपनी माँ से बेहद प्यार करता था।

(ख) मास्टर साहब को लेखक पर बहुत गर्व था। वे उनके प्रिय शिष्य थे। इस कारण वे लेखक की नियुक्ति से प्रसन्न थे। लेखक उनके खिन्न होने का भी कारण था। वास्तव में, मास्टर साहब कुछ आलसी तबीयत के थे। इस कारण उन्हें सब हेडमास्टरों से फटकार खानी पड़ी थी। अब उन्हें यह डर सता रहा था कि कहीं अपने ही शिष्य से फटकार न खानी पड़ जाए।

(ग) चंद्रगुप्त चाणक्य का शिष्य था। वह जानता था कि उसके गुरुदेव (चाणक्य) ने जो बातें कही हैं, वे देशहित में हैं इसलिए उसने नंद से प्रार्थना की कि उन्हें अपमानित न किया जाए, बल्कि उनके सुझावों पर विचार किया जाए।

3. (क) (*iv*), (ख) (*iv*), (ग) (*i*), (घ) (*i*), (ङ) (*i*)

4. (क) वर्तमान युग तकनीक का युग है। आज के युग में न तो कुओं से पानी खींचा जाता है और न ही तलवारों से युद्ध लड़ा जाता है। वही देश आत्मनिर्भर और सुरक्षित हो सकता है, जिसके पास तकनीक है।

तकनीक से भारी उद्योग चलाए जा सकते हैं, उपग्रह और मिसाइलें बनाई जा सकती हैं। तकनीक में पिछड़ापन वास्तव में परतंत्रता की ओर ले जाता है।

(ख) विदेशी पर्यटक सीमित समय के लिए ही किसी देश में जाते हैं। वहाँ वह सीमित स्थानों को ही देख पाता है और सीमित लोगों से ही मिल पाता है। मान लो किसी विदेशी को एक हज़ार भारतीय मिलें और सबका व्यवहार बहुत बढ़िया हो तो उसकी नज़र में सब भारतीय अच्छे हो जाएँगे। इसी प्रकार इसके ठीक उलट भी हो सकता है यदि अधिकतर भारतीय उसके साथ अच्छा व्यवहार न करें तो। इस प्रकार हमारे क्रियाकलाप पूरे देश के क्रियाकलाप माने जाते हैं।

(ग) ये पंक्तियाँ पूरे मज़दूर वर्ग की ओर संकेत करती हैं। कविता में मज़दूर ने स्वयं के लिए और स्वयं जैसे अन्य मज़दूरों के लिए 'मैं' शब्द का प्रयोग किया है। इस 'मैं' में उस जैसे अनगिनत मज़दूर आते हैं, जो पूरे विश्व में फैले हुए हैं। और वे अपने विविध कार्यों द्वारा जगत को सुंदर बना रहे हैं।

5. स्वयं कीजिए।

6. (*i*) क्षणभर (कालवाचक), (*ii*) कुछ (परिमाणवाचक)

7. (*i*) स्वर्गीय, (*ii*) हितैषी, (*iii*) सुखी, (*iv*) प्यासा

8. (*i*) निर्माण, (*ii*) केंद्र, (*iii*) राष्ट्र, (*iv*) समर्पण

9. (*i*) सुरक्षा + इत, (*ii*) कीमत + ई, (*iii*) चंचल + ता, (*iv*) प्रथम + इक

10. **संकेत :**

सेवा में
मुख्याध्यापिका महोदया
---------- विद्यालय / स्कूल

विषय : असावधानी पर खेद प्रकट करने हेतु।

महोदय।

मैं ---------- कक्षा 8-ब का छात्र ---------- कल कबूतर का एक बच्चा रोशनदान में फँसा ---------- उसे बचाने हेतु खिड़की का शीशा टूटा ---------- मुझे अपनी असावधानी पर खेद है ---------- मैं भविष्य में सचेत व जागरूक रहूँगा ---------- मैं आशा करता हूँ आप मेरे विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही नहीं करेंगी ----------

धन्यवाद सहित

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रोल नं० ----------
कक्षा : ----------

11. **संकेत :**

(क) मधुरवाणी– मधुर वाणी प्रकृति का वरदान ---- इसके लिए हमें कुछ खर्च नहीं करना पड़ता, मधुर वाणी बोलने वाला सदा प्रसन्न, विनम्र एवं अहंकार-रहित, मधुर वाणी सुनने वाला भी प्रसन्न, यह बिगड़े काम बनाए, शत्रु को भी मित्र बनाए, प्रेम-प्यार, भाईचारे और सहयोग का वातावरण बनता है, कटुता समाप्त होती है, मधुर वाणी के लाभ ही लाभ, सबको मधुर वाणी का ही प्रयोग करना चाहिए।

(ख) **देशभक्ति–** देश लोगों से बनता है, मगर देशभक्ति से जीवित रहता है, जहाँ देशभक्ति नहीं होगी वह देश बच ही नहीं सकता, यदि जैसे-तैसे बच भी गया तो लुंज-पुंज होगा, विश्व में ऐसे देश को सम्मान नहीं होगा, देश-भक्त ही देश की असली शान, देशभक्ति के कारण ही देश को विश्व में सम्मानित स्थान।